प्रेमावतार

(क़ाज़ी-उद्धार)

[नाटक]

लेखक—

ब्रजमोहन 'मधुर'

ॐ

प्रेमावतार

(क़ाज़ीउद्धार)

[नाटक]

ब्रजमोहन 'मधुर'

प्रकाशक
रामनरसिंह हरलालका
मन्त्री—अखंड संकीर्तन,
गोरखपुर

सं० १९९३
प्रथम संस्करण
१०००

मुद्रक—घनश्यामदास जालान—गीताप्रेस, गोरखपुर

समर्पण

प्रेम और आनन्दके मूर्तिमान् विग्रह

श्रीराधाकृष्णके मूर्तिमान् अभिन्न

स्वरूप प्रेमावतार श्रीश्रीचैतन्यके

चरणोंमें ही उनकी

यह वस्तु

समर्पित है।

उनका ही— **ब्रजमोहन 'मधुर'**

दो शब्द

श्रीव्रजमोहनजी 'मधुर' रचित प्रेमावतार महाप्रभु श्री-चैतन्यकी एक महत्त्वपूर्ण लीलाका दृश्य उपस्थित करनेवाले इस मधुर 'प्रेमावतार' नामक एकांगी नाटकको पढ़-सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई। बहुत ही सुन्दर भाव हैं। श्रीमधुरजीको इसके लिये बधाई। मैं 'मधुर'जीसे निवेदन करता हूँ कि वे इसी प्रकारकी भक्त और भगवान्‌की मधुर लीलाओंकी रचना-कर और खेलकर अपना और पाठकों तथा दर्शकोंका जीवन धन्य करें।

हनुमानप्रसाद पोद्दार

॥ श्रीहरिः ॥

भूमिका

श्रीमन्महाप्रभु चैतन्यदेवने अपने भक्तिभाव और प्रेमप्रदान-द्वारा फँसे हुए प्राणियोंको परम शान्ति प्रदान की है। उनके द्वारा असंख्यों प्राणियोंका उद्धार हुआ है और उन्हें अहैतुकी भक्ति प्राप्त हुई है।

श्रीव्रजमोहनजी 'मधुर' कई वर्ष हुए तब मुझसे अलीगढ़में मिले थे और उन्होने इच्छा प्रकट की थी कि मैं श्रीचैतन्यचरितावलीके आधारपर महाप्रभुके प्रेमप्रदानके ऊपर एक छोटा-सा स्वतन्त्र नाटक रचना चाहता हूँ। मैंने उनको इस शुभ इच्छाका हृदयसे अभिनन्दन किया। यह देखकर मुझे परम हर्ष हुआ कि उन्होंने इस एकांगी 'प्रेमावतार' नाटकको बड़ी सुन्दरतासे तैयार करके उसे रंगमञ्चपर खेला भी है और जनताने उसे अत्यधिक पसंद भी किया है। उसी नाटकको गोरखपुरके इस अखण्ड कीर्तनयज्ञके उत्सवमें कुछ उत्साही महानुभाव खेल रहे हैं और सभी हृदयसे इस नाटककी प्रशंसा करते हैं। व्रजमोहनजी उर्दूके सुकवि और सिद्धहस्त लेखक हैं, वे नाट्यकलामें भी प्रवीण हैं। उनकी इस सफलतापर हम उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि वे इसी तरह और भी विशुद्ध धार्मिक अभिनयोंको तैयार करके भगवद्भक्तोंके आनन्दकी वृद्धि करेंगे।

अखण्ड कीर्तनयज्ञ, गोरखपुर
आषाढ़ी शुक्ला त्रयोदशी सं० १९९३

प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

श्रीहरिः

॥ श्रीराधारमणो जयति ॥

!! जय गौर !!

* श्रीगुरवे नमः *

मंगलाचरण

(स्थान—महाप्रभुका मन्दिर। गुरुदेव कुछ शिष्योंके साथ आरती कर रहे हैं।)

अपनो तन मन धन सब वारूँ।

महाप्रभु चैतन्यदेवपर तन मन············।

चलत फिरत और सोवत जागत, गौर ही गौर पुकारूँ।

अपनो तन······

गौर अंगकी मोहनी मूरत भर भर नयन निहारूँ।

प्रेमके पाँसे फेंक फेंककर जीत ही जीत पुकारूँ।

अपनो तन······

लखूँ रास, सुख विलास, मनकी आश, करूँ प्रकाश,

लीलाधारी, कुंजविहारी, हरी मुरारी, असुरारी।

तन मन धन सब वारूँ

(दण्डवत् करके मन्दिरका पट बंद करना, शिष्योंका जाना और ज्ञानचन्दका आना)

ज्ञानचन्द—शोक, महाशोक ! पाप, महापाप !! अत्याचार, घोर अत्याचार !!! गली-गलीको छान डाला, संसारके कल्याण करनेकी फिक्रमें गोते खाता हुआ पागलोंकी तरह परेशान फिरता रहा। मगर हर जगह पाप और दुष्कर्मसे लिथड़े हुए इन भाग्यहीन संसारी जीवोंने मेरे पैर उखाड़ दिये—

हर तरफ छाया हुआ इक घोर अत्याचार है।
हर तरफ ही पाप और दुष्कर्मकी भरमार है॥

गुरुदेव—(स्वगत) भक्तिको छोड़कर पूरे ज्ञानको सर्वस्व समझनेवाला उलटे पैरों भाग आया ! (प्रकट) क्यों ज्ञानचन्द ! संसारके उद्धारके लिये कौन-सी तदबीर निकाली ?

ज्ञानचन्द—गुरु महाराज ! तदबीर तो बड़ी सहल थी। मगर मनुष्यने अपने कर्मोंसे उसे बहुत मुश्किल बना दी है, और······

गुरुदेव—कहो-कहो उसे भी कहो !

ज्ञानचन्द—महाराज ! क्या कहूँ, जिधर गया उधर ही घोर अत्याचार है। स्त्रियोंकी हाय-हाय और पुरुषोंकी आहभरी पुकार ! इस तूफान-को देखकर मैं निराश लौट आया।

गुरुदेव—तो तुम्हें उनकी आह और पुकारपर भी दया न आयी ?

ज्ञानचन्द—दया ! महाराज ! उनके तो पास बैठनेसे भी कलंक लगता, उनकी संगतसे तो मेरा ज्ञान भी भ्रष्ट हो जाता—

पापके प्रचंड झोंकोंने जब हिम्मत तोड़ दी।
मैंने फिर कल्याण होनेकी ही आशा छोड़ दी॥

गुरुदेव—भक्तिके विरोधी ज्ञानीने दयाका अधूरा ही पाठ पढ़ा तो यूँ कहो कि कोरे ज्ञानसे पूरा काम न चला। तुम्हें इतना भी ज्ञान न हुआ

कि भक्तिमार्गके चलनेवाले तो पापी और दुखी जीवोंके कल्याणके लिये अपना सर्वस्व त्याग देते हैं। परन्तु तुम अपना अधूरा ज्ञान भ्रष्ट हो जानेके डरसे उनसे बात करनेमें भी डर गये। ज्ञानचन्द फिर समझो—

भक्ति संग जब ज्ञान नहीं तो भक्त नहीं वह पूरा है।
भक्ति नहीं तो बिना भक्तिके पूरा ज्ञान अधूरा है॥

ज्ञानचन्द—सत्य है, गुरुदेव ! सत्य है। भवसागरसे पार जानेके लिये ज्ञानको किसी बलकी सहायता अवश्य चाहिये।

गुरुदेव—वह सहायता करनेवाली ही तो भक्ति है। रहा न ज्ञान और भक्तिका जोड़ा। (स्वगत) अब देखूँ ज्ञानी क्या तर्क करता है।

ज्ञानचन्द—महाराज ! (सोचकर) ज्ञानकी सहायताके लिये तपबल भी तो कम नहीं है। ज्ञान और तपका जोड़ा भी हो सकता है।

गुरुदेव—(मुस्कराकर) अरे मूर्ख ! तपस्वी भी तो किसीको सहायताके लिये साथ रखनेपर तैयार हो जब न। उसके लिये तो उसका तपोबल ही सफलताकी सीढ़ी है। यदि भूल गया हो तो राजभक्त अम्बरीषकी कथा फिर सुनाऊँ, जब कि तपस्वी दुर्वासाके तपोबलको भगवान् विष्णुके सामने भक्तराज अम्बरीषकी भक्तिदेवीसे क्षमा माँगनी पड़ी थी। इसके साक्षी सुदर्शनदेव हैं, जब कि वे चक्रके रूपमें दुर्वासाके शिरपर घूमते हुए उनके तपबलको काँटेमें तोल रहे थे और उस समय तपस्वी दुर्वासा राजभक्त अम्बरीषके चरणोंमें गिरकर जीवनदान माँग रहे थे। पहले तो—

उस राजभक्तपर कोप किया अभिमानमें इतने फूल गये।
पर भक्तिके चक्करमें आ सब अपनी तपस्या भूल गये॥

ज्ञानचन्द—सत्य है महाराज ! यथार्थमें भक्तिकी शक्ति बहुत बड़ी है।

गुरुदेव—समझ गये न कि वह भक्तिदेव जो अपने भक्तिबलसे संसारके

कल्याणकी युक्ति सोचने गया है उसकी भक्तिकी शक्ति मामूली शस्त्र नहीं, तलवारकी धार है। और कोरी ज्ञानगुदड़ी बेकार है। ज्ञानमार्गके साथ-साथ अनुरागमार्ग भी आवश्यक है।

ज्ञानचन्द—हाँ महाराज! मान गया, भक्तिहीमें आनन्द है।

(भक्तिदेवका गाते हुए आना)

प्रेमके रसमें पगे हुए हैं, प्रेमके रंगमें रँगे हुए हैं,
प्रेम ही प्रेम पुकारत हैं।
जब ज्ञानमें ज्ञानी सोता है, जब लयमें तपस्वी होता है,
तब प्रेमकी बाजी बाजत हैं।
सब गावत हैं, हम रोवत हैं, सब सोवत हैं, हम जागत हैं।
और प्रेमके रंगमें रँगे हुओंको, प्रेमसे नाम सुनावत हैं॥
और प्रेम ही प्रेम पुकारत हैं।

भक्तिदेव—आनन्द है, सर्वत्र आनन्द है, जिसे भक्तिका प्रेमप्याला कर देता है मतवाला, उसे चारों ओर दीख पड़ता है हरियाला ही हरियाला।

गुरुदेव—(स्वगत) आ गया! अनुरागमार्गका बटोही भी आ गया। (प्रकट) भक्तिदेव! आ गये, बड़ी देर लगायी।

भक्तिदेव—महाराज! श्रीहरिनामसंकीर्तनकी ध्वनिने मेरे कानोंमें अमृत घोल-घोलकर और फूलोंसे सजे हुए सिंहासनपर विराजमान श्रीराधारमणलालजीकी मधुर मुस्कानने संसारके उद्धारकी क्या, मेरे ही तन-मनकी सब सुध भुला दी—

थी प्रेमध्वनि रस घोल रही फूलोंसे सजा सिंहासन था।
स्थान था अनुपम प्रेममयी मोहनका मनोहर दर्शन था॥

गुरुदेव—यह तो बहुत अच्छा था। परन्तु तुम जैसे गये, वैसे ही लौट आये। अकेली भक्तिके कंधोंपर संसारके उद्धारका भार सौंपने-

वाले भोले भक्तदेव इसमें भी बड़ा रहस्य है, जो तुम दोनोंके मिलनेपर प्रकाशित होगा। अच्छा तो तुमने कौन-सी युक्ति सोची?

भक्त—महाराज! जिधर गया वहीं आनन्द पाया। कहीं भगवान्‌की रास-लीला आनन्दकी वर्षा कर रही थी; कहीं पदकीर्तन और कहीं सुन्दर बाजोंकी मधुर तानें प्रेमके मार्गकी झलक दिखा रही थीं। कहीं हरि-नाम-ध्वनिकी झनकारें आकाशतक गूँज रही थीं। ऐसे आनन्दमें मैं क्या कल्याण और उद्धारकी फिक्र करता?

गुरु—ठीक है, कीर्तन समाप्त हो गया और तुम यहाँ चले आये, मैंने तुम दोनोंको जिस मतलबसे भेजा था वह पूर्ण न हुआ। ज्ञानी तो अपने ज्ञानघमंडमें आकर संसारके उद्धारके लिये सबसे पहले संसारकी बुराइयोंको देखने लगा। पर यह न सोचा कि बुराइयोंके वेगसे उसके अधूरे ज्ञानकी क्या दशा होगी। क्यों ज्ञानचन्द समझे?

ज्ञानचन्द—हाँ महाराज! समझा। परन्तु भाई भक्तदेव भक्तिबल होते हुए भी निराश लौट आये, इसका क्या कारण है?

गुरु—कारण? कारण यह है कि उन्होंने अपनी भक्तिके रसरंगमें बुराइयोंपर निगाह ही नहीं की, केवल अच्छाइयोंको ही देखा और बिना ज्ञानके केवल अपना ही कल्याण कर सके। आनन्दसागरमें गोता लगाते रहे परन्तु दूसरोंको उस सागरके रस पिलानेका ज्ञान ही न आया।

भक्त—जी हाँ समझ गया महाराज! वह कमी ज्ञानहीकी थी।

गुरु—हाँ ज्ञानहीकी थी। अकेले अनुरागमार्गसे काम नहीं निकल सकता और केवल ज्ञानमार्गसे भी काम नहीं चल सकता। सच्चा आनन्द दोनों मार्गोंके मिलानेसे है। जब दोनों ही पलड़े बराबर होंगे तभी हम संसारमें सच्चा सुख, सच्चा आनन्द और सच्चे प्रेमकी आदर्श मूर्तियाँ प्रकट कर सकेंगे। ज्ञानमें भक्तिकी कमी थी और भक्तिमें ज्ञानकी।

दोनों—धन्य-धन्य गुरुदेव ! धन्य है !

(दोनोंका चरणोंमें गिरना)

गुरु—अब तो तुम दोनोंकी शंकाएँ दूर हो गयीं ? दोनों प्रेमसे गले मिलो। ज्ञान और भक्ति मिलकर संसारमें आनन्दकी वह धार बहा दें, जिसमें नहा-नहाकर सब जीव, अपने-अपने पापोंको नष्ट कर दें।

(दोनोंका उठकर गले मिलना और पटाक्षेपपर भगवान् महाप्रभुका षट्भुजीदर्शन)

सब—बोलो महाप्रभु चैतन्यदेवकी जय !

(ड्राप बंद होना)

गुरुदेव—ज्ञान और भक्तिके मिलते ही महाप्रभु गौरके अवतारका गोपनीय भाव भी प्रकट हो गया। अब महाप्रभुकी लीला दिखानेके लिये आज हमें उन्हींकी शरण लेनी पड़ेगी। क्यों, भक्तदेव ! तुम्हारे काममें कुछ देर तो नहीं है ?

भक्त—कुछ नहीं, बड़ा आनन्द तो यह है कि सब हरिभक्तोंने मिलकर महाप्रभु गौरका वह चरित्र जबसे वे गयाजीसे लौटकर आये हैं और उस स्थानतक जब कि उन्होंने काजीका उद्धार किया है, भली प्रकार सोच-विचारकर प्रेमसे तैयार किया है।

गुरुदेव—अच्छा तो आज सज्जनोंको वही लीला दिखायी जावे जब कि बड़े-बड़े विद्वान् भी वैष्णवताके गौरवको न समझकर 'अहं ब्रह्मास्मि' और कोरे वेदान्तको साक्षात्कारका सार समझे हुए थे। जब कि संसारी अत्याचारी कंसके समान अत्याचार करके वैष्णवधर्मका गला घोंट रहे थे उस समय हमारे भगवान् महाप्रभु गौराङ्गका अवतार हुआ। और उन्होंने दुराचारियोंका कल्याण करके संसारको प्रेम-पन्थ दिखाकर कल्याणका सबसे सहल मार्ग बतला दिया, वह मार्ग क्या था ज्ञानचन्द ?

ज्ञानचन्द—वह मार्ग भगवन्नामानुराग था।

गुरुदेव—उसका परिणाम क्या हुआ भक्तदेव !

भक्तदेव—बड़े-बड़े साधु-महात्मा, ज्ञानी, विद्वान् और वेदान्ती नामकी महिमाको समझ गये और कलियुगमें श्रीहरिनामसंकीर्तनकी धारा बहने लगी।

गुरुदेव—धारा बहने लगी नहीं—बल्कि श्रीगौराङ्ग महाप्रभुकी कृपासे प्रेम और संकीर्तनका महासागर उमड़ पड़ा। साधु, संन्यासी, वेदान्ती श्रीकृष्णचन्द्रके ही नहीं, बल्कि युगलमूर्ति श्रीराधाकृष्णके उपासक बन गये। ज्ञानचन्द, भक्तदेव! जाओ, अब देर न करो। समय बहुत हो गया है, अब अभिनय आरम्भ करो।

दोनों—जैसी आज्ञा।

गाना

गौर है गौर है गौर है, सब जीवोंको प्रेमका पंथ दिखावनहारा,
जग उजियारा, शचीदुलारा, गौर है·········
प्रेमका जिसने पाठ पढ़ाया, राधाकृष्णतत्त्व बतलाया
कौन है वो जीवोंका प्यारा, प्राण हमारा? शचीदुलारा
गौर है, गौर है, गौर है।

आज उसीकी लीला रचायें, प्रेमका अमृत रस बरसायें
तब आवेगा प्राण हमारा, 'मोहन' प्यारा, शचीदुलारा,
गौर है, गौर है, गौर है।

(सबका जाना, रास्तेका परदा गिरना)
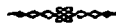
ड्राप पहिला ❀ सीन पहिला

(काजीके मकानका अंदरूनी महल, काज़ीसहित दो सरदार रसीद और कासिम बैठे हैं)

क़ाज़ी—कहो, मेरे बहादुर सरदारो ! शहरमें सब अमनोअमान है न ?

क़ासिम—हुजूर, अमनोअमान क्या वही बागी गिरोह जो मज़हबको ओटमें रियायाको सुलतानसे बददिल कर रहा है, बराबर सर उठाये चला जा रहा है।

क़ाज़ी—यह खयाल ठीक नहीं है। उस गिरोहको मुल्की मामलातसे कुछ ताल्लुक़ नहीं है।

रसीद—ताल्लुक़ नहीं है तो रफ्ते-रफ्ते हो जावेगा। हमें अभीसे उन बदज़ातोंकी सरकशीको फ़िरो करना चाहिये और अब एक बार और हमला करना चाहिये।

क़ाज़ी—राय तो मुनासिब है। शहरके मौज़िज़ आदमियोंने भी मुझसे इबादतके इस नये तरीक़ेकी शिकायत की है। और सिकन्दरने खुफ़िया तौरसे पता भी ऐसा ही लगाया है।

रसीद—आज ही फ़ौजको हुक्म दिया जावे और शहरपर धावा बोल दिया जावे।

क़ाज़ी—आज ही !

रसीद—हाँ ! आज ही। सरकार ! अगर यह खबर सुलतानको पहुँच गयी तो हम सबके हक़में अच्छा न होगा। बादशाहके हुकुम और क़ानूनके मुताबिक़ हर शाही खैरख्वाहको किसी क़िसकी गिरोह-बंदी या बग़ावत फ़ौरन फ़िरो करनेकी कोशिश करनी चाहिये।

क़ाज़ी—बेशक, ठीक कह रहे हो, मेरे सरदारो ! शहरपर हमला कर दो। जाओ तुम सब फौज आरास्ता करो और मैं भी आता हूँ।

[९]

(सरदारोंका जाना)

इन सरकशोंको शहरसे बाहर निकाल दो।
फ़िनार कर दो आग जहन्नुमकी डाल दो॥

बेगम साहेबा—(आकर) जहाँपनाह ! किसको फ़िनार करनेका हुक्म दिया जा रहा है ? किसको बरबाद किया जायेगा।

क़ाज़ी—उन्हीं मलऊनोंको, उन सियाहरू गुनाहगारोंको और उस बागी-गिरोहके सरदार निमाई पण्डितको।

बेगम—मेरे सिरताज ! इसमें बगावतकी तो कोई बात ज़ाहिर नहीं होती। वो तो अपने ख़ुदाको पूजता है।

क़ाज़ी—उसका रास्ता ग़लत है।

बेगम—आपकी नज़रोंमें।

क़ाज़ी—वह बाग़ी है।

बेगम—आपको ग़लत इत्तिला दी गयी है।

क़ाज़ी—वह सरकश है।

बेगम—झूठी खबर है। उस ख़ुदादोस्त हस्तीसे हसद करनेवालोंकी मक्कारी है।

क़ाज़ी—यह किसलिये ?

बेगम—आपके ग़लत कान भरनेके लिये।

क़ाज़ी—उससे लोग क्यों जलते हैं ?

बेगम—उसे बरबाद करनेके लिये।

क़ाज़ी—नहीं, कुछ ब्राह्मणोंने भी मुझसे कहा है कि रोकर-चिल्लाकर भजन करना मज़हबके ख़िलाफ़ है, ख़ुदा दिलमें सोता है, उसे आहिस्तासे जगाना चाहिये। अगर वो नाराज़ हो गया तो तमाम ज़मानेपर अपना क़हर नाज़िल कर देगा।

बेगम—और आपने यकीन कर लिया कि वह क़ादिरे मुतलक़ दिलमें सोता है ? नहीं !—

जहाँने ऐशको वह ख़्वाबे ग़फलतसे जगाता है।
वही भटके हुओंको रास्ता सीधा बताता है॥
वह यूँ नाराज़ हो जाये यह मुमकिन हो नहीं सकता।
यह माना दिलमें रहता है मगर वह सो नहीं सकता॥

क़ाज़ी—चाहे कुछ भी हो मगर आज मैं ख़ुद शहरमें जाकर ये शरारतें बंद करा दूँगा।

बेगम—ख़ुदाके वास्ते इस इरादेसे बाज़ रहिये।

क़ाज़ी—सल्तनतके कामोंमें दख़ल देना तुम्हारा काम नहीं।

बेगम—मगर यह सल्तनतका काम तो नहीं !

क़ाज़ी—मैं फिर कहता हूँ कि यह सब गिरोह रफ्ते-रफ्ते मुल्कमें बदअमनी फैला देगा। सब निज़ामे सल्तनत पलट देगा—

मैं इन सबको हवाएँ जेलख़ानेकी खिलाऊँगा।
मैं इनकी आरज़ुएँ ख़ाकमें सारी मिलाऊँगा॥

बेगम—सरपर यह अज़ाब न लीजिये। हरेक मख़्लूक़ ख़ुदाकी औलाद है। हरेकसे ख़ुदा मोहब्बत करता है। हमारा मज़हब और शरै हुक्म नहीं देता कि मख़्लूक़का दिल दुखाया जाय। किसीके मज़हबी मुआमुलातमें बेजा और नाजाइज़ मुख़ालफ़त की जाय—

इन ज़ुल्मों और जफ़ाओंसे होते हैं सर तस्लीम कहीं।
हम औरोंपर यों ज़ुल्म करें यह मज़हबकी तालीम नहीं॥

क़ाज़ी—यह बात मैं ख़ुद समझता हूँ, मगर...

बेगम—मगर क्या—किसीके बहकानेसे, किसीके वरगलानेसे, ऐसा न कीजिये। ख़ुदाको जितने हम अज़ीज़ हैं उतने ही वे लोग।

क़ाज़ी—उनको लोग पागल कहते हैं।

बेगम—

जो उनको पागल कहते हैं वो पागल हैं, सौदाई हैं।
वह क्या जानें हम क्या समझें अल्लाहके सब शैदाई हैं॥
हिन्दू भी उसीके बन्दे हैं मुसलिम भी उसकी ख़लक़त हैं।
क्यों आपसमें हम बैर करें जब दोनों भाई-भाई हैं॥

क़ाज़ी—मुझसे लोग बराबर शिकायत कर रहे हैं कि आप शहरके मालिक हैं, बादशाहके नुमाइन्दे हैं, आपको हर मज़हबकी हिफ़ाज़त करनी चाहिये।

बेगम—**शिकायत आपसे जो करते हैं ख़ुद सामने आयें।**
ख़ुद उनको रोकने जायें, ख़ुद उनको जाके समझायें॥
दिलोंपर तेग़ो बुर्रोंसे हुकूमत हो नहीं सकती।
जफ़ाएँ करके मज़हबकी हिफ़ाज़त हो नहीं सकती॥

क़ाज़ी—मैं उनसे वादा कर चुका हूँ, आज मुझे ज़रूर जाना पड़ेगा और उसको ख़ुद गिरफ्तार करके लाना पड़ेगा।

बेगम—सरकार मानिये।

क़ाज़ी—तुम क्यों रास्तेमें रोड़े अटका रही हो ?

बेगम—मैं आपको उस जगह हरगिज़ न जाने दूँगी। मेरा दिल अंदरसे गवाही नहीं देता। उसके नाना पं० नीलाम्बरजीको आप बुज़ुर्ग मानते थे, वह भी आपका अज़ीज़ है—

उस बेगुनह पै कहर यों नाजिल न कीजिये।
ख़ुद अपनेको गुनाहमें शामिल न कीजिये॥

क़ाज़ी—ख़ामोश रहो।

बेगम—दिल रोकता है ज़ुल्म न कीजिये।

क़ाज़ी—नहीं वो इन्साफ़ है।

बेगम—ग़ौर फ़रमाइये।

क़ाज़ी—ख़ूब सोच लिया।

(क़ाज़ीका जाना)

बेगम—(स्वगत) गये, मेरे मने करनेपर भी गये। ऐ ख़ुदा! तू देख रहा है। यह सब शरारत किसकी है। झूठी शिकायत करके कान भरनेवाले पसपर्दा कौन हैं, मैं जानती हूँ वो मासूम हस्तियाँ तेरे इश्क़में रो-रोकर तुझे याद करती हैं, तू ही इन्साफ़ करनेवाला है।

गाना

इलाही बेकसोंके सिरपै, यह कैसी मुसीबत है।
ख़ुदाका नाम लेना भी हुकूमतमें बग़ावत है॥
न इसमें सरकशी है कुछ, न कुछ उनकी शरारत है।
यह हासिद और मक्कारोंकी, सब झूठी शिकायत है॥
ख़ुदाकी यादमें रोनेको पागलपन समझते हैं।
वह क्या जानें यही सच्ची लगन, सच्ची इबादत है॥
गये हैं वह शहरमें, दुश्मनोंके वरग़लानेसे।
इलाही उनपै सब ज़ाहिर करे, जो कुछ हक़ीक़त है॥
'मधुर' वह झूमकर आईं, घटाएँ वाबेजन्नतसे।
इधर किश्ते तमन्ना है, उधर वह अब्रे रहमत है॥

पहला ड्राप * सीन दूसरा

(श्रीमहाप्रभुजीका शुभस्थान)

(श्रीविष्णुप्रियाजी अपनी सहेलियोंके साथ मन्द स्वरसे कीर्तन कर रही हैं)

(धुनि)–जय राधे जय राधे राधे, जय राधे जय श्रीराधे।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण, जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण॥

कञ्चनप्रतिमा—बहन ! मैं देखती हूँ कि अब तो तुम्हारे पतिदेव घरकी सब सुध-बुध भूलते जा रहे हैं ।

कमला—हाँ, यही तो मैं भी कहती हूँ कि वे तुमसे रुष्ट-से रहते हैं ।

प्रतिमा—अब तो रात्रिभर श्रीवासजीके ही यहाँ कीर्तन होता रहता है ।

विष्णुप्रिया—कह लिया या और कुछ कहना है । यदि आज उनकी कृपा होगी तो तुम्हारी सब शंकाएँ दूर हो जायँगी ।

विमला—बहन ! (हँसकर खामोश हो जाती है)

विष्णु०—हाँ, हाँ, तू भी कह, विमला तू क्यों खामोश हो गयी । अब नहीं तो कुछ दिन बाद तू भी कहने लगेगी ।

विमला—नहीं बहन ! कुछ नहीं कहूँगी ।

विष्णु०—कहेगी क्यों नहीं ? ज्यों-ज्यों इस संसारका मायाजाल तुझे काम और मोहके फंदोंमें जकड़ता जायगा तू भी इन संसारी भोली-भाली नारियोंकी तरह कुछ-का-कुछ समझकर जरूर कहा करेगी ।

प्रतिमा—फिर वही बात । हम तो केवल आपकी विपताको देखकर कुछ कह देती हैं ।

विष्णु०—विपता ! मगर सोचो तो कि जिस दशाको तुम विपता कह रही हो वास्तवमें यह है क्या ? जिसे तुम कहती हो कि वे रुष्ट रहते हैं, वह यथार्थमें भाव क्या है ?

प्रतिमा—अव्वल तो घरमें आते ही बहुत कम हैं और आते हैं तो तुमसे बहुत कम हँसते-बोलते हैं ।

विष्णु०—बड़ी मूर्ख हो, इसीमें समझ लिया कि हमारे पतिदेव भगवान् हमसे रुष्ट हैं । हाय रे ! सांसारिक प्रेम !

विमला—और क्या बात है ?

विष्णु०—यह सब मनकी कल्पना और वासनाओंका प्रभाव है कि तुम इतनी जल्द बात समझकर उलटा नतीजा निकाल लेती हो ।

प्रतिमा—सो कैसे, अब तो विषय बड़ा गम्भीर हो गया है, मुझे भी बताना।

विष्णु०—शोक तो यह है कि अबतक तुम मुझे दुखी समझा करती थी। अपनी आँखोंपर विषय और कामकी धुँधली ऐनक रखकर महाभाग्यशालिनी विष्णुप्रियाके परम आनन्दसे पूर्ण उज्ज्वल सागरमें तुम्हें दुःख और विपताकी काली लहरें दिखायी देती थीं। यह तुम्हारे भावका दोष था। समझीं?

कमला—बहन! यह तो तमाम बात ही काट दी, मगर हमारे पतिदेव तो...

विष्णु०—कहो उनकी भी कहो, कमला! देखो, ये कामनाएँ जितनी बढ़ती जाती हैं उतना ही दुःख होता जाता है। हमारा कर्तव्य क्या है, हमारा जीवन क्यों हुआ, हमें मनुष्ययोनि ही क्यों मिली? इनपर सोच-विचार करनेसे तुम्हें भली प्रकार मालूम हो जायगा कि वास्तवमें दुःखी कौन है? विषयी, कामी, क्रोधी। और सुखी कौन है? परमसंतोषी, श्रीराधाजीका अनुरागी।

प्रतिमा—मैंने तो घर-गृहस्थीके बारेमें कहा था।

विष्णु०—तुमने तो शुरूआत ही की थी। पं० श्रीवासके यहाँ रात्रिभर कीर्तनमें पधारनेसे या सदा भगवान् कृष्णका गुणगान करनेसे मेरे स्वामी तुम्हें घर-गृहस्थीसे अलग और बिल्कुल दूर दीख पड़ते हैं? तुमने तो संसारकी स्त्रियोंका सब स्वभाव सादर्श प्रकट कर दिया। हाय! नारियोंके भावकी यह गति!

प्रतिमा—मगर इसमें प्रेमका कुछ अभाव तो दीख पड़ता है।

विष्णु०—प्रेम और उसमें अभाव! सागर और उसमें सूखा! यह कैसे हो सकता है? प्रेम-जैसी पवित्र वस्तु, इसमें किसी प्रकारकी घटा-बढ़ी कमी हो ही नहीं सकती। यह तो परिपूर्ण है।

प्रतिमा—प्रेम?

विष्णु०—हाँ प्रेम, और जो तुम्हारी बुद्धिमें प्रेम है और जिसमें भाव-अभाव

चिल्लाती हो वह प्रेम नहीं। वह काम और वासनाओंमें चूर हृदयकी विचलित गति है, जिसे कि मोह कहते हैं—

गाना

जिसे प्रेम प्रेम तुम कहती हो वह मोहने जाल बिछाया है।
वह जगका झूठा बन्धन है वह जगकी झूठी माया है॥
दोहा—हृदय अघट आनन्दमें रहै सदा भरपूर।
प्रीतम प्रेम न घट सकै पास रहो चाहे दूर॥
छिन बढ़ता है छिन घटता है सो प्रेम नहीं हो सकता है।
वह दुनियाने छलनेके लिये एक मायाजाल बिछाया है॥
'मोहन' सब झूठी माया है।

सब—धन्य देवी, धन्य !

विष्णु०—जितनी तुम संसारकी वासनाओंमें लिप्त होती जाओगी उतना ही दुःख होता जावेगा और जितना इन्हें त्यागकर अपने मनको सन्तोष और धैर्यसे दाबकर भगवान्‌के चरणोंमें लगाओगी, आनन्दसे कीर्तन करोगी उतना ही सुख बढ़ता जायगा। (दासीका आना)

दासी—स्वामिनीजी ! प्रभु पधार रहे हैं।

(सबका जाना, महाप्रभुजीका प्रेमविभोर हुए द्रौपदीचीरहरणलीलाका चिन्तन करते हुए आना)

महाप्रभु—हरि बोल, हरि बोल, दयालु कृपालु ! द्रौपदीजी बीच सभामें लायी गयीं······उनकी साड़ी दुष्ट दुःशासनने पकड़ ली, हा ! अब नहीं देखा जाता ······हा कृष्ण ! प्राणप्यारे कृष्ण ! (रोने लगते हैं)।

विष्णु०—स्वामी ! स्वामी !!

महाप्रभु—इसके पश्चात् मनमोहन !······

विष्णु०—प्राणेश ! प्राणेश !!

महाप्रभु—प्रिये ! फिर कैसी लीला हुई ? चितचोर नन्दकिशोर देख रहे थे······

विष्णु०—प्रभु ! यह आपकी कैसी अवस्था है ?

महाप्रभु—अवस्था ! विष्णुप्रियाजी ! उस समयकी अवस्था न पूछो, उस अन्धकारमय स्थानमें सतीने करुणासे केवल एक बार पुकारा 'कृष्ण' प्रिये ! तुम भी कहो, प्रेमसे कहो।

दोनों—कृष्ण ! हा मधुसूदन !!

महाप्रभु—अहा हा, हा, हा, आनन्द और सुखकी वर्षा होने लगी, प्रकाश हुआ—कैसा प्रकाश हुआ—व्रजचन्द आनन्दकन्दके सुन्दर और मनोहर मुखारविन्दका—फिर चीर बढ़ने लगा और बढ़ा—

(गाकर) वसनरूप भये स्याम······कृष्ण मधुसूदन············

(घबरा जाते हैं और विष्णुप्रियाजी सम्हालकर पलंगपर लिटा देती हैं)।

विष्णु०—हैं ! बेहोश हो गये, प्रभु ! प्रभु !! भक्तिस्वरूप भगवान्‌के प्रेमावतार और विश्वमोहनस्वरूपकी कैसी विचित्र लीला है। (बालोंको सम्हालकर) प्रेमी भौंरे कमलके कोमल पुष्पको कितने सुखसे निहार रहे हैं और त्रिलोकीनाथ अपने विरहमें रो-रोकर अपने कृष्ण-स्वरूप नामको पुकार रहे हैं—

जब पूर्ण प्रेमघटनाओंके हृदयमें भाव उभरते हैं।
पलभरमें केश सँवरते हैं, छिनभरमें बाल बिखरते हैं॥
भगवतकी अद्भुत महिमाको प्रेमीजन हियमें धरते हैं।
अपनी लीलाओंकी चिन्ता भगवान् आप ही करते हैं॥

महाप्रभु—(रोना) कृष्ण ! हा कृष्ण !!

विष्णुप्रिया—यह पल-पलमें कैसी दशा हो जाती है । भगवन् ! दीनबन्धो ! दया कीजिये । मेरे स्वामीपर दया कीजिये । (रुककर) हैं, विष्णुप्रिया ! यह तू क्या कह रही है ? कौन दया करें ? किसपर दया करें, भगवान् स्वयं अपनी रक्षा करें ! कैसी मूर्ख है (रुककर) परन्तु मेरा हृदय क्यों घबरा जाता है । सब कुछ जानते हुए भी मैं यह क्या कह जाती हूँ, मुझसे अपराध हो जाता है । नहीं, मेरा प्रेम मुझे ऐसा करनेपर विवश करता है । एक स्त्रीका कोमल हृदय प्रेमवश होकर न जाने क्या कह जाता है । मैं सब जानती हूँ । पर यह प्रेम मुझे सब भुला देता है । यह सब इन लीलाधारीकी ही लीला है । नाथ ! नाथ !!

कभी गिरते हो पृथ्वीपर कभी बेहोश होते हो ।
कभी लीला रचानेके लिये चिल्लाके रोते हो ॥
मैं सब कुछ जाननेपर भी तो सब कुछ भूल जाती हूँ ।
फँसाकर मुझको मायामोहसागरमें डुबोते हो ॥

स्वामी ! स्वामी !!

(अंदरसे नित्यानन्दजीकी नामध्वनिका सुनायी देना)

नित्यानन्द—हरि हरि बोल बोल हरि बोल मुकुन्द माधव गोविन्द बोल !!

(महाप्रभुजी करवट लेते हैं)

विष्णु०—कानोंमें प्रभु नित्यानन्दजीने हरिनामअमृतरस घोल दिया, करवट बदली ।

(महाप्रभुजी उठते हैं)

विष्णु०—धन्य हो ! यही तो प्रेम है । श्रीहरिनामरसपान होते ही आँखें खुलीं । मुरझाये हुए कमलकी पत्तियाँ फिर ताजा हो गयीं ।

नित्यानन्द—हरि हरि बोल, बोल हरि बोल, मुकुन्द माधव गोविन्द बोल।

(नित्यानन्दजीका प्रकट होना, विष्णुप्रियाजीका जाना)

महाप्रभु—(उठकर) श्रीपाद !

नित्यानन्द—भगवन् !

महाप्रभु—श्रीपाद ! ऐसा न कहिये, मूर्ख निमाई पण्डितको इतना न बढ़ाइये। आप संसारके पूज्य हैं।

नित्यानन्द—भगवन् ! ऐसा न कहिये।

महाप्रभु—जीवोंको प्रेमदान देकर संसारसे उबारनेवाले, जीवोंको भक्तिका मार्ग दिखाकर भगवत्को वशमें रखनेवाले, प्रियशिरोमणि ! आप सब योग्य हैं।

नित्यानन्द—प्रभो ! अज्ञान और पापके घोर अन्धकारमें भटकनेवाले समस्त प्राणियोंको आप ही श्रीहरिनामधुनिका महामन्त्र देकर प्रेम और भक्तिके परम सुखदायी मार्गपर ले आनेवाले हैं। आप ही सब जीवोंके आधार हैं, सर्वशक्तिमान् हैं। कृपालु श्रीवासजीके घरपर कुछ प्रेमी आपका दर्शन करना चाहते हैं। आज्ञा हो तो उन्हें यहाँ बुला लिया जाय।

महाप्रभु—नहीं प्रभु ! मैं स्वयं उनके पास जाता हूँ। (जाते हैं)

नित्यानन्द—भगवन् ! आप कितने कल्याणकारी हैं जो कि पतित जीवोंका कल्याण करनेके लिये स्वयं भागकर जाते हैं और इन्हें प्रेमसे गले लगाते हैं।

(नित्यानन्दजीका हरिनामध्वनि करते हुए जाना)

स्थान—रास्ता ।

पासहीके मकानसे संकीर्तनध्वनि आ रही है ।

हरि हरये नमः कृष्णयादवाय नमः ।
कृष्णयादवाय माधवाय केशवाय नमः ॥

चपल—(आकर) नाश, सर्वनाश । इस नगरका ही नहीं, इस प्रान्तका ही नहीं, सकल संसारका सर्वनाश ! विषय और कामके पुतलोंने पापका इतना गठा हुआ जाल फैला दिया है कि हर एक जीव इसमें फँस रहा है । अपनी वासनाओंकी पूर्तिके लिये अनोखे ढोंग रच रहा है ।

श्रीवास जैसे ज्ञानी ब्राह्मण, अद्वैताचार्य जैसी महान् आत्मा ! तुमने अपना सर्वस्व खो दिया । आप डूबे और दूसरोंको भी डुबो दिया । वह कलका छोकरा निमाई जो गली-गलीमें घूमता-फिरता था, अब इन विमूढ़ कुकर्मियोंके आगे भगवान् बन गया और पुजने लगा । मगर परवा नहीं—

मिटा दूँगा मैं उन सबको यह मुश्किल खेल कितना है ।
ज़रा मैं भी तो देखूँ इन तिलोंमें तेल कितना है ।
मैं सबको क्रोधकी प्रचंड ज्वालामें जला दूँगा ।
मैं इस नदियामें इनका कीर्तन करना भुला दूँगा ।
कुकर्मी पापियोंकी जड़से बुनियादें हिला दूँगा ॥

(धुन सुनकर) हैं, वही आवाज़ ! कानोंमें होकर तमाम शरीरमें आग जला देनेवाली वही चीख़ पुकार ! सम्हल जाओ । गुनाहकी अँधेरी गलियोंमें रसरंगका स्वप्न देखनेवाले घोर अत्याचारियो ! सम्हल जाओ, भोलेभाले बालकों, पुरुषों और

स्त्रियोंको बहका-बहकाकर अपने भगवान्‌की ओटमें दुनिया-का माल हड़प करनेवालो ! खबरदार हो जाओ ! यह चपल अब तुम्हें चैनसे न रहने देगा । तैयार हो जाओ । अब राजके जेलखानोंके दरवाज़े तुम्हारा स्वागत करनेके लिये खुलने-हीवाले हैं (फिर ध्वनि सुनकर) रो लो ! खूब रो लो। जी भरकर च... ओ और अपनी सहायताके लिये अपने कृष्ण भगवान्‌को भी बुला लो ।

देवानन्द—(आकर) बुला लिया और वे भी आ गये । चपल ! क्या तुम्हें यह नहीं मालूम ?

चपल—देवानन्द ! मूर्ख देवानन्द !! किसे बुला लिया और कौन आ गये ?

देवानन्द—भगवान्‌को बुला लिया और भगवान् आ गये । गौरहरिरूपमें अवतीर्ण होकर दुष्कर्मियोंका कल्याण करनेके लिये ।

चपल—बस ! अब नहीं सुना जाता । ये कठोर शब्द हृदयपर जाकर अग्निपर आहुतिका काम देते हैं ।

देवानन्द—अवश्य देते होंगे । महाप्रभु गौरका नाम ही शरीरमें पहुँचकर खलबली पैदा कर देता है ।

चपल—खलबली नहीं, यह तुम्हें भस्म करनेके लिये अग्नि है ।

देवानन्द—जो अन्दर-ही-अन्दर तुम्हारे पापोंको भस्म कर रही है । (ध्वनि) सुनो ! इस हरिनामधुनको सुनो !! और इस निर्मल धारा······

चपल—सुन रहा हूँ, इस ध्वनिको भी सुन रहा हूँ और तेरे उस धूर्त भगवान्············

देवानन्द—बस खामोश, चपल ! अगर उनके लिये एक शब्द भी मुँहसे निकाला तो अंजाम अच्छा न होगा ।

चपल—क्या अंजाम होगा ?

देवानन्द—जो सबका होता है।

चपल—अच्छा इतना ज़ौम। ज़रा-सी पीपनीमें इतनी आवाज़। (सामने देखकर) हैं, यह सामनेसे सिकन्दर आ रहा है।

सिकन्दर—(आकर) वाह दोस्त! अच्छे मौकेपर मिले। लाओ इनाम दिलवाओ।

चपल—सब ठीक है न ?

सिकन्दर—ठीक और बिल्कुल ठीक। मैंने क़ाज़ीसाहबको सब समझा दिया है कि शहरके गुण्डों और बदमाशोंने मिलकर एक गिरोह बना रक्खा है।

चपल—और वह बात ?

सिकन्दर—वह भी कह दी कि सब अपनी मज़हबकी ओटमें नयी तरक़ीबोंसे अपने देवताओंके नामके नारे लगाकर इन फ़र्ज़ी और दिखावटी तीरोंसे शिकार कर रहे हैं। गुनाहोंकी भरमार कर रहे हैं। अवामकी रातकी नींदोंमें ख़ललअन्दाज़ होकर उन्हें बीमार कर रहे हैं।

चपल—और बग़ावतके बारेमें ?

सिकन्दर—अजी उसे तो इतना नमक-मिर्च मिलाकर कहा कि बस, क्या बताऊँ।

चपल—क्या कहा ?

सिकन्दर—मैंने साफ़-साफ़ कह दिया कि इन तिलकधारी डाकुओंका मज़हबी गिरोह रफ्ते-रफ्ते सियासतमें क़दम रख रहा है। मज़हब और मुल्कको मिलाकर सल्तनतमें दाख़िल होना चाहता है। इसपर वे और भी बिगड़ गये और आगबबूला होकर कहने

लगे कि हम अभी आते हैं और इन सबकी अक़्लको ठिकाने लगाकर ज़ेलखानोंकी हवा खिलाते हैं।

चपल—क्यों देवानन्द ! सुन लिया ! इस धुनको भी सुन लिया न ? तुम्हारी धुन तो पापियोंका ही कल्याण करती है मगर यह धुन बड़े-बड़े पुण्यात्माओंका भी कल्याण कर देगी।

देवानन्द—सुन रहा हूँ, .ख़ूब सुन रहा हूँ, उस समयका तो इन्तज़ार ही है, घड़ा भर चुका है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

(धुनका जोरसे सुनायी देना)

चपल—बस अब नहीं सुना जाता। चलो सिकन्दर ! जरा इनके मकानके अंदर चलकर इन धर्मका सत्यानाश करनेवालोंकी अक़्लोंको ठिकाने लगायें।

सिकन्दर—हाँ, हाँ, चलो क़ाज़ी साहबके आनेसे पहिले इन्हें होशमें लायें।

(दोनोंका भीतर जाना)

देवानन्द—मैं भी चलता हूँ, देखूँ ये क्या उपद्रव मचाते हैं।

(जाना)

(स्थान—कीर्तन-भवन)

(सिकन्दर, चपल और देवानन्दका पहुँचना)

सिकन्दर—अबे ! खामोश हो जाओ ! इस वावैलाको बंद करो !! भाग जाओ । क्यों अपने-आपको मुसीबतमें डालते हो ।

प्रेमी नं० १—कैसी मुसीबत । अहा ! (हँसना)

चपल—मुसीबत, आफत और ज़लालतकी बेड़ियोंमें जकड़े जानेसे पहिले हँस लो ! खूब जी खोलकर हँस लो । अभी वो दादा गुरु आकर तुम सबको जेलखाने भिजवायेगा और अच्छी तरहसे स्वर्गका दर्शन करायेगा ।

प्रेमी नं० २—स्वर्गका दर्शन ? स्वर्ग ? स्वर्गकी परवा ही किसे है । यही जीवन हो, यही प्रेम हो, हम सब प्रेमी हों और हमारा प्यारा हो ।

देवानन्द—धन्य हो, जय हो, यही है आनन्दका सार । क्यों चपल, समझ लिया कि प्रेमी स्वर्गकी भी परवा नहीं करता है । जिस स्वर्गको प्राप्त करनेके लिये तपस्वी अपने सैकड़ों जीवन व्यतीत कर देता है वह स्वर्ग प्रेमियोंके पैरोंमें लोटता है । और प्रेमी उसे ठुकराकर आगे बढ़ जाता है ।

चपल—हाँ हाँ—पत्थरके नीचेसे अँगुली निकालनेकी सफाई तो तुम्हें खूब अच्छी तरह आती है । न मिलनेके कारण लोमड़ी ही अंगूरको खट्टा बताती है ।

प्रेमी नं० १—लोमड़ी और अंगूरका जिक्र क्या । यह तो अमृतका समुद्र है—

मुबारिक हो तुम्हींको स्वर्ग उसकी चाह किसको है।
इन अंगूरोंकी और उस स्वर्गकी परवाह किसको है।
हृदय लवलीन हो भागीरथीकी स्वच्छ धारा हो।
ब्रजमोहनकी बाँसुरिया पै अटका मन हमारा हो।
उधर हरिनामधुन हो और इधर वो प्राणप्यारा हो॥

हरि हरि······

(क़ाज़ीका कासिम और रसीदके साथ आना)

(कीर्तन होते रहना)

क़ाज़ी—बंद करो इस वावैलाको ! क्या शोर-शार है ?

सिकन्दर—अरे बदमाशो—सरकारके हुकुमकी भी परवा नहीं !

चपल—दीवानो ! कुछ हुजूरकी भी आमदका ख़याल है ?

देवानन्द—उन्मत्त प्रेमियोंको कीर्तन करनेसे एक साथ रोक देना, ज़रा मुश्किल सवाल है।

क़ाज़ी—ख़ामोश हो जाओ, और अपने-अपने घर चले जाओ। वर्ना फिर निज़ामे सल्तनत अपनी पूरी कुव्वतोंके साथ तुमपर ज़ुल्म करनेके लिये तैयार हो जायगा।

(कीर्तन होते रहना)

क़ाज़ी—हैं ! बदस्तूर फिर वही वावैला (कोड़ा मारकर) क्यों अब तो मानेगा।

प्रेमी नं० १—(ज़ोरसे) हरि हरये नमः।

चपल—ख़ामोश हो जाओ। अब भी अपनी हरकतोंसे बाज़ आओ।

क़ाज़ी—इस तरहसे कहना बेकार है, लातोंके देवताओंको बातोंसे समझाना—

देवानन्द—इन धमकियोंसे डराना बेकार है।

क़ाज़ी—तो, लो सम्हलो पाजियो !—

अब बरसता है क़हर ज़ुल्मकी सूरत बनकर ।
बिजलियाँ कौंधती हैं सीनेपै आफत बनकर ॥
(कोड़े मारता है ।) क्यों अब कुछ होश आया ?

प्रेमी नं० १—होश था और अब भी है मगर इतना ही—हरि हरये नमः ।

क़ाज़ी—(झाँझ फेंककर)

जहाँमें तुमको मैं जीनेसे भी बेज़ार कर दूँगा ।
तुम्हारी हस्तियोंको आनमें फिन्नार कर दूँगा ॥

प्रेमी नं० ३—

हमारा क्या बिगाड़ोगे अगर फिन्नार कर दोगे ।
लगाकर आग दिलमें प्रेमकी भरमार कर दोगे ॥
बड़ा एहसान होगा गर हमें बेज़ार कर दोगे ।
हमारे जिस्मको बेकारसे बाकार कर दोगे ॥
हृदयकी मूरतीको गुससे साकार कर दोगे ।

क़ाज़ी—उफ़ (कोड़े मारता है) क्यों तू क्या कहता है पागल बदज़ात ?

प्रेमी नं० २—क्या कहें और किससे कहें । जिससे लोग कहा करते हैं वह तो सामने ही खड़ा हुआ मुस्कराकर सब कुछ देख रहा है । अहो ! कितनी मनोहर मुस्कान है ।

मैं इस आनंदपर वारी मैं इस मुसकानपर [illegible] ।
मेरे मोहनमें मुरलीकी सुरीली तान[illegible] वारी ।
मैं इस छबिपर हूँ वारी आनपर और [illegible]नपर वारी ॥

क़ाज़ी—(कोड़े मारकर) ले अब अच्छी तरह वारी हो जा।

(कीर्तन होते रहना)

क़ाज़ी—क्यों बे नमकहराम ! अब भी नहीं देते अपनी ज़बानको लगाम। ले जाओ इन सबको हवालातकी हवा खिलाओ ! इन सबपर हंटर बरसाओ और इन्हें होशमें लाओ। इनकी इबादतगाहें आजसे जेलखाना होगा। जहाँ ये झाँझ और ढोलककी बजाय सर धुन-धुनकर अपनी फूटी हुई तक़दीरपर आँसू बहाया करेंगे।

सब—हरि हरये नमः।

क़ाज़ी—फिर वही बेताला गान—फिर वही बेसुरी तान हरी-हरी-हरी।

प्रेमी नं० ३—कल्याण हो गया ! एक बार नाम लेनेसे ही सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। आपने तो मेरे प्यारेके प्यारे नामको तीन बार मुखसे उच्चारण किया—

हजारों जन्मके सब पाप छिनमें दूर करता है।
हृदयको शान्त और आनंदसे भरपूर करता है॥
गुनाहोंके पहाड़ोंको यह छिनमें चूर करता है।
यह वो मरहम है जो हर मर्ज़को काफ़ूर करता है॥

गाइये, क़ाज़ी साहब प्रेमसे गाइये। **हरि हरये नमः।**

क़ाज़ी—सुन चुका बस खामोश—

जहालतसे मेरे गुस्सेको और भड़काये जाता है।
मने करता हूँ मैं, तू ढोलकी खड़काये जाता है॥

(कोड़े मारना)

प्रेमी नं० ३—जोरसे—**हरि हरये नमः ।**

क़ाज़ी—अच्छा यूँ न मानेगा तो यूँ सही । क़ासिम ! खींच लो इस मलऊनकी गरदनसे यह ढोलक और इसको चूर चूर कर दो ।

(खोल गरदनसे उतारना और तोड़ना)

सियाहकारो मैं इस मस्तीको दममें चूर कर दूँगा ।
यह जितना शोर और तूफ़ान है काफ़ूर कर दूँगा ॥

सिकन्दर ! ले जाओ इन गुनाहके पुतलोंको मेरे सामनेसे दूर ले जाओ और इनको अच्छी तरहसे सुना दो कि आइंदा किसीने यह तूफानेबदतमीज़ी बरपा करनेकी जुर्रत की तो सल्तनतके क़ानूनका तौक़ होगा और इन मलऊनोंकी गरदनें होंगी । सिकन्दर !

सिकन्दर—सरकार ।

क़ाज़ी—इनकी दम-दमकी हरकतोंसे हमें मुत्तला करना तुम्हारा काम है ।

(जाता है)

सिकन्दर—जो हुकुम हुज़ूर—क्यों बे सौदाइयो ! सुन लिया न ।

देवानन्द—ये क्या सुनेंगे । सरदार साहब ! सुननेवाला तो कोई और ही है ।

सब— हरि बोल हरि बोल·········

चपल—अहा हा हा !—बड़े मूर्ख, बड़े निर्लज्ज ज़रा भी लाज नहीं ।

देवानन्द—अरे शर्म करो । इस मुँहको छिपा लो । तुम्हें भगवत्-प्रेमियों-को मूर्ख और निर्लज्ज कहनेमें लज्जा नहीं आती ।

चपल—लज्जा—आँखोंसे देख लिया । कोड़े पड़ चुके । खोल टूट चुका । फिर भी खामोश नहीं होते । लज्जा-लज्जा पुकारते हैं ।

सिकन्दर—अच्छा ऐ ढोलक ! अगर अब आइंदा भजन करना है तो

घरकी एक बंद कोठरीमें घुसकर किसी अँधेरे कोनेमें दीवारकी तरफ मुँह करके भजन करना होगा, भजन—भजन। बड़े भजनानन्दी बने।

प्रेमी नं० ३—हाय विधाता !–यह प्रहार। भगवद्भजनमें राजकी ओरसे यह घोर अत्याचार। क्या हमें भगवान्‌का गुणगान करनेमें ऐसी बाधाओंका सामना करना पड़ेगा ?

प्रेमी नं० २—हे भगवन् ! क्या श्रीहरिनामसंकीर्तनका आनन्द प्राप्त करनेके लिये हमें इस नगरको छोड़ना पड़ेगा।

प्रेमी नं० ४—भाई, यदि ऐसा ही है तो चलो किसी और स्थानमें जाकर वास करेंगे और वहाँ प्रभुका नाम स्मरण करेंगे।

प्रेमी नं० १—नहीं, यों तो भजन और स्थानपर भी हो सकता है परन्तु किसीके धमकानेसे, दुराचारियोंके डरानेसे कायर बनकर मर्यादाको न तोड़ेंगे। उससे तो और अपराध होगा। हम तो इस नदिया-हीमें पैदा हुए हैं, नदियाहीमें कीर्तन करेंगे और नदियाहीमें मरेंगे।

चपल—क्या बात है !! हाय हाय मचाकर नदियामें ही मरेंगे मगर किसी कोनेमें भजन नहीं करेंगे।

देवानन्द—हाँ, तुझ-से कायरकी तरह डरकर म्लेच्छों और अधर्मियोंकी झूठी शिकायतोंके भयसे अपने सिद्धान्तको कभी न बदलेंगे।

प्रेमी नं० १—हाँ, जानके डरसे मैदानसे पीछे हटकर पाप कभी न मोल लेंगे।

देवानन्द—समझा चपल ! अब समझा ?

चपल—देवानन्द ! मूर्ख, ढोंगी ! अब कीर्तन बंद करना पड़ेगा।

देवानन्द—वही जाप है।

चपल—जाप नहीं, घोर पाप है।

देवानन्द—उसीमें सर्वसुख है।

चपल—सुख नहीं संताप है।

देवानन्द—वही आशीर्वाद है ।

चपल—आशीर्वाद नहीं शाप है ।

देवानन्द—इसका परिणाम तेरे लिये पश्चाताप है ।

चपल—जब होगा तब देखा जायगा, मगर इस वक़्त तो वही होगा जो मैं कराऊँगा ।

देवानन्द—यह महापाप है, देख, पछतायेगा ।

चपल—इसकी चिन्ता नहीं ।

देवानन्द—कलंकित हो जायगा ।

चपल—इसका भय नहीं ।

देवानन्द—संसारमें भटकता फिरेगा ।

चपल—वह सब मैं भुगत लूँगा, सिकन्दर ! चलो, अगर ये आइन्दा सर उठायेंगे तो क़ाज़ीसाहबके हुकुमके बमुजिब अपने कियेकी सज़ा पायेंगे ।

सिकन्दर—हाँ चलो । (प्रेमियोंसे) क्यों बे ! अब तो होशमें हो ?

प्रेमी नं० १—होश ! कैसा होश ?

(चपल और सिकन्दर दोनोंका मज़ाक उड़ाते हुए जाना)

यही तराने ज़बाँ पे होंगे हमेशा दिलमें ये जोश होगा ।
मना करे कोई लाख हमको न होश था और न होश होगा ॥

प्रेमियोंका गाना—

दीवानेसे क्या पूछते हो बेहोश है तू या होशमें है ।
आँखोंसे धारा बहती है और दिलका दरिया जोशमें है ॥

दोहा—वो नयना जल जल मरें, जिन न लखी छबि कान्ह ।
जिन निरखत ही जल बहे, उनको नयना जान ॥

आँखोंसे धारा बहती है·····························

इस तनपर कोड़े पड़नेसे मन प्रेमकी डोरपै नाचता है ।
एक प्रेम मूर्ति मुसकाती है, यह तन उसकी आगोशमें है ॥

दीवानेसे क्या—

ब्रजमोहन या बिरहमें, सब जल गयौ शरीर ।
नयननको जल जल चुको कैसे निकसे नीर ॥

एक प्रेममूर्ति·········

(प्लाट फटना)

श्रीरामपञ्चायतनदर्शन ।

ड्राप

ड्राप दूसरा ❀ सीन पहला

(श्रीवासजीका शुभस्थान)

(बजाज, सुनार और नित्यानन्दजीका बैठे नजर आना और महाप्रभुजीका गाते हुए आना)

गाना

सुन हरिनामकी झनकार ।

डार-डार पै कूकत कोयल, तनक रूप निहार, विलसत,

गावत राग मल्हार । सुन हरि······

धन्य प्रेमको सार, मिले जिन मनकी बीणाके तार—

छाई बहार, बजत सितार, भवसे उबार लेत है,

रटत 'मोहन' गौर पहुँचे छिनमें भवके पार ॥
सुन हरिनामकी झनकार ॥

बजाज—धन्य हो प्रभु ! आपकी बड़ी कृपा है ।

महाप्रभु—कृपा ! सब कृपा उस परमब्रह्म परमेश्वरकी है । मैं तो आप सबका दास हूँ ।

सुनार—महाराज ! संसारमें बड़ा दुःख है और गृहस्थीकी बेड़ियोंने तो और भी कसकर जकड़ रक्खा है ।

महाप्रभु—कुछ नहीं, दुःख और सुख तो संसारकी चढ़ती-ढलती छाया है । आनन्दसे कीर्तन कीजिये । मुक्तिका साधन यही है । रात-दिन उसका ध्यान रखिये, उसीका नाम जपिये और जब कभी समय मिले तो मित्रकुटुम्बियोंसहित भाई-बहिन, पिता-पुत्री, स्त्री-पुरुष सब मिलकर संकीर्तन कीजिये । प्रेमसे श्रीहरिगुणगान कीजिये ।

सुनार—महाराज ! क्या कीर्तन करें ? घरके झगड़ोंसे समयतक नहीं मिलता ।

बजाज—महाराज, बिल्कुल सत्य है ।

महाप्रभु—आप सब काम कीजिये और कीर्तन भी साथ-साथ करते जाइये । इसके लिये किसी एकान्त स्थानपर जमकर बैठना आवश्यक नहीं है । क्यों श्रीपाद ! ठीक है न ?

नित्यानन्द—प्रभो ! सत्य है, जिनकी मनोहर वाणीमें वेद, पुराण, श्रुति इत्यादिका तत्त्वसार झलकता रहता है, उनके वचनोंमें भी क्या कोई संशय हो सकता है ?

महाप्रभु—तो आप समझ गये ? चलते-फिरते, बैठते-उठते आनन्दसे श्रीहरिनामधुन उच्चारण करते रहिये ।

बजाज—महाराज, धुन उच्चारण कैसे हो ? गाना भी तो नहीं आता ।

महाप्रभु—आप नहीं जानते तो क्या है, आपकी आत्मा तो सब कुछ जानती है और सब कुछ जाननेवाले तो परमात्मा हैं, भाव सच्चे होने चाहिये । केवल सुर और तालहीसे कीर्तनमें सुख नहीं होता । इस हरिनाममहासागरको उमड़ा देनेके लिये, महान् आनन्दवर्षा करनेके लिये सच्चा प्रेम और भाव आवश्यक है—

ताल और स्वर ही नहीं बस कीर्तनका सार है ।
ये तो उस हरिनामके आकारका शृंगार है ॥
पर जो लाखों सूर्य चमकाता है इस आकारमें ।
और हृदयको फँसा देता है इस शृंगारमें ॥
जिसके तड़पानेसे ये रोता सकल संसार है ।
वह अनोखी वस्तु मनमोहनका सच्चा प्यार है ॥

सब—धन्य, धन्य, श्रीभगवान्‌की जय ।

नित्यानन्द—आ हा हा हा हरि हरि !

महाप्रभु—पहले तो आप समय निकालिये और जबतक आपको समय न मिले तबतक अपना काम करते हुए ही आनन्दसे कीर्तन करते रहिये । आप तो कपड़ेका व्यापार करते हैं ?

बजाज—जी हाँ महाराज !

महाप्रभु—आपको तो दूकानपर समय मिल सकता है । आपका व्यापार बहुत अच्छा है । और आप महोदय ?

सुनार—महाराज, मैं सोने-चाँदीके आभूषण बनाता हूँ ।

महाप्रभु—बहुत ठीक है । आपको समयकी क्या चिन्ता ? मनोहर कीर्तन कीजिये । हथौड़ीसे स्वर्णपर चोटें लगाते जाइये और मुखसे ऐसे उच्चारण करते जाइये (ताली बजाकर बताते हैं)—

हरिहरये नमः कृष्णयादवाय नमः ।
कृष्णयादवाय माधवाय केशवाय नमः ॥

(द्वारसे हाहाकार सुनायी देना)

महाप्रभु—श्रीपाद ! यह कैसा हाहाकार है ?

(नित्यानन्दजीका जाकर प्रेमियोंको ले आना और सबका प्रणाम करना)

महाप्रभु—आइये, पधारिये । कहिये सब आनन्द है ? खूब उत्साहसे कीर्तन हो रहा है न ?

पहला प्रेमी—क्या बताएँ प्रभु ! कि कैसा कीर्तन हो रहा है !

महाप्रभु—कहिये, कहिये ।

दूसरा प्रेमी—न पूछिये दयालु, न पूछिये । हृदय अंदर-ही-अंदर रो रहा है ।

महाप्रभु—ऐसा है तो बड़ा सुख है ।

सब—सुख नहीं महादुःख है ।

नित्यानन्द—हैं, यह क्या बात है ?

प्रेमी नं० ३—महाराज, यह हम दुर्बल नगरवासियोंपर राज्यका वज्रपात है।

नित्यानन्द—क्यों ? क्या कुछ भयानक समाचार है ?

दूसरा प्रेमी—भयानक समाचार नहीं घोर अत्याचार है ।

महाप्रभु—अत्याचार, और निर्दोष जीवोंपर······कहो, कहो, मेरे प्राण-प्यारे वैष्णवो ! जल्दी कहो । अत्याचारका नाम सुनकर हृदय व्याकुल हो रहा है ।

पहला प्रेमी—प्रभो ! आपकी आज्ञानुसार हम सब नगरवासी खोल और करतालपर नामकीर्तन और हरिगुणगान करते हुए जा रहे थे। उस समय—हा·········

महाप्रभु—कहो, कहो ! जल्दी कहो !!

प्रेमी नं० ४—नगरका क़ाज़ी कुछ सिपाहियोंको लेकर उस जगह आ पहुँचा, हमसे कीर्तन करनेको मना किया, मगर उस समय हमसे कीर्तन बंद न हो सका। इसपर उस क्रोधी, अभिमानी, अत्याचारीने हमपर कोड़ोंकी वर्षा करनी शुरू की। फिर आगे·········

प्रेमी नं० १—आपके चरणोंकी कृपासे उसके कोड़ोंकी मार हमारा कुछ न बिगाड़ सकी। हमें कुछ न मालूम हुआ बल्कि और आनन्द आया—

तनपे कोड़ोंकी सजा थी हमें मालूम न था।
सरपे एक काली घटा थी हमें मालूम न था॥
कुछ भी तकलीफ न थी दर्दका अहसास न था।
आगे हरिनामके क्या था हमें मालूम न था॥

प्रेमी नं० २—हम सब प्रेमी यों ही कीर्तन करते रहे, मगर जब उसने हाथोंसे करतालें छीनना शुरू कर दिया तो हमारे आनन्दमें विघ्न पड़ने लगा। उसके बाद उस पापीने और क्रोधित होकर इनके गलेसे जबरदस्ती खोल उतरवाकर पृथ्वीपर दे मारा।

प्रेमी नं० ३—(रोकर) हो गया, चूर-चूर हो गया। मेरे जीवनको आनन्दसे भरपूर करनेवाला आपका दिया हुआ प्रसाद जमीनपर गिरते ही चूर-चूर हो गया। हृदय फट गया और मैं अबतक जिंदा हूँ। प्रभु नित्यानन्दजीका प्रदान किया हुआ खोल टूट गया। मैं ही अपराधी हूँ !

भगवान्‌की कृपासे अबतक जो पाया था वह भ्रष्ट हुआ।

इस दुनियाँमें इस जीवनका सब किया कराया नष्ट हुआ॥

प्रेमी नं० २—भाई, तुम इतने व्याकुल न हो। इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। दोष तो क़ाज़ीका ही है।

नित्यानन्द—हाँ, तुम क्यों पश्चात्ताप करते हो। वही दोषी है।

महाप्रभु—(स्वयं) क़ाज़ीके भाग्यका सितारा अब चमकनेहीवाला है, समय आ ही गया। भगवन्! हृदयको विदीर्ण करनेवाला यह दृश्य अब नहीं देखा जाता। भक्तोंकी ऐसी दुःखभरी कथा सुननेकी शक्ति जब आपमें नहीं है तब यह दास भी अब नहीं सहन कर सकता।

नित्यानन्द—कल्याणकारी, मुरारी भगवान्‌का दयासागर उमड़नेके लिये विकल हो रहा है—

जगतमें भक्त जब अनुरागके आँसू बहाता है।

भला भगवान्‌को गोलोकमें कब चैन आता है॥

प्रभु अब क्या आज्ञा है? यह क़ाज़ीकी अब तीसरी प्रार्थना है।

महाप्रभु—अच्छा, अब तुम न घबराओ। किसीसे न डरो। इस नगरकी गली-गलीमें बड़े आनन्द और उत्साहसे कीर्तन होगा, और क़ाज़ीके द्वारपर भी होगा। उधर उसकी अस्त्रों और शस्त्रोंसे सजी हुई सेना होगी। इधर खोल-करताल लिये हुए श्रीहरिनाम-संकीर्तन होगा। पापियोंकी पराजय होगी और श्रीहरिनाम-संकीर्तनकी जय होगी। नित्यानन्दजी, आज मेरी एक आज्ञा है!

नित्यानन्द—कहिये प्रभु!

महाप्रभु—आप सब नगरवासियोंको यह संवाद सुना दीजिये कि आज सायंकालको हमारा नगरकीर्तन होगा। क़ाज़ीकी आज्ञाके विरुद्ध आज हम तमाम नदियामें श्रीहरिनामसंकीर्तन करेंगे। संकीर्तन-

विरोधियोंके कूड़े-कर्कटको प्रेम और भक्तिकी बाढ़से बहाकर तमाम नगरको पवित्र और पूर्ण प्रकाशमय बना देंगे।

नित्यानन्द—(उछलकर) अहा ! मनकी अभिलाषा आज पूरी होगी। महाप्रभु गौराङ्गके गोपनीय कीर्तनसे आज समस्त नगरवासी लाभ उठाकर श्रीगौराङ्गप्रेममें उन्मत्त हो जायँगे और जिस समय प्रभुके सेवक इस प्रेम और भक्तिकी बाढ़में, इस अथाह सागरमें कूदकर इस शरीरको बिल्कुल छोड़ देंगे, तब कैसा अपूर्व आनन्द रहेगा ! धन्य हो भगवन् ! आपकी जय हो।

(सबका जय बोलना और चारों तरफ आकर चरण छूना और महाप्रभुके चारों ओर एक प्रकाश दिखलायी देना)

ड्राप दूसरा * सीन दूसरा

(रास्ता, चपल और सिकन्दरका आना)

चपल—और उस दिनका भी तीर ठीक निशानेपर बैठा।

सिकन्दर—कौन ?

चपल—पिछले शुक्रवारकी तो बात ही है, मैंने उस कीर्तनाचार्य श्रीवासके दरवाजेपर एक हाँड़ीमें मांस और मदिरा रखकर धूप जला दी और एक कालीकी मूर्त्ति रख दी।

सिकन्दर—यह किसलिये ?

चपल—उनको ज़लील और बदनाम करनेके लिये, लोगोंको यह दिखानेके लिये कि यह वाममार्गियोंका ढकोसला है। मैंने सुबह ही सब रास्ता चलनेवालोंको यह दिखा दिया कि इस मकानके अंदर कीर्तन-बीर्तन कुछ नहीं होता। ये सब मक्कार मांस और मदिराका

भोग लगाकर खूब खाते-पीते हैं। इतनेमें वह श्रीवास और सब कीर्तनके ढोंगी भी अन्दरसे आ गये।

सिकन्दर—फिर क्या हुआ ?

चपल—होता क्या ? रोते आये और मरेकी खबर लेकर चले गये। घड़ों पानी पड़ गया। अपना-सा मुँह लेकर सब लौट गये।

सिकन्दर—मगर चपल, यह बात इन्सानियतके खिलाफ है।

(नित्यानन्द, एक भक्त, वीरेन्द्र, मनमोहन और राजेन्द्रका गाते हुए आना)

गाना

कलयुग केवल नाम सुमिर ले, भवसे जो तरना चाहे।
सतयुगमें तप कर-करके भगवान्‌का दर्शन पाते थे।
त्रेतामें भवसे तरनेको, मुनिजन यज्ञ कराते थे।
द्वापरमें अर्चन बन्दन औ सेवा ही बतलाते थे।
कलयुग केवल नाम·········

नित्यानन्द—आज नगरके सौभाग्यका दिन है कि हमारे निमाई प्रभु सायंकालको नगरमें कीर्तन करते हुए पधारेंगे। नगरवासी आजके दिन जितना हर्ष मनावें उतना ही कम है। कीर्तनदल श्रीहरिनाम-संकीर्तन करता हुआ अफगान छावनीकी सड़कसे होकर क़ाजीके महलतक जायगा।

सबके—हरि बोल हरि बोल हरि बोल।

गाना

सुमिरन कर ले नारायणको क्यों भटके डोले नादान।
मचा डालो नदियामें सोर नामकी उठे घटा घनघोर।
गली-गलीमें करो कीर्तन चली जाय चाहे जान,
सुमिरन कर ले············

प्रगट भये धनुष बाण लिये राम, सुदर्शनचक्र लियो घनश्याम,

महाप्रभूने प्रेम भक्तिसे कियो 'मधुर' कल्याण,

सुमिरन कर ले............

सिकन्दर—चपल, सुन लिया !

चपल—सब झूठ, मज़ाक, कोरी शेखी ।

सिकन्दर—शेखी नहीं, मैं खुद देखकर आया हूँ कि सब मकान सजा रहे हैं, झण्डियाँ लगा रहे हैं, तमाम शहरमें संकीर्तनका शोर मच रहा है, मगर इस बेवकूफ पण्डितकी बात सुनकर मुझे सख्त ताज्जुब होता है कि कहाँ हमारी जबरदस्त फौज और कहाँ यह बुज़दिल गिरोह !

चपल—अच्छा है—

इन्हें मारो मिला दो खाकमें बेदाद होने दो।
ये सब मक्कार पापी हैं इन्हें बरबाद होने दो ॥

सिकन्दर—अच्छा, मैं क़ाज़ी साहबको इत्तला दे दूँ ।

चपल—यार, यकीन करो, कीर्तन नहीं होगा ।

सिकन्दर—नहीं, मुझे जाना ही चाहिये । (जाता है)

चपल—भला उसकी क्या मजाल है कि क़ाज़ी साहबके सामने सिर उठाये—

वह अपनी जानको हरगिज़ यूँ खतरेमें न डालेगा ।
बहाना कुछ-न-कुछ वो इससे बचनेका निकालेगा ॥
बड़ा मक्कार है चलता हुआ है चालवाला है ।
कमानेका यह उसने इक निराला ढँग निकाला है ॥

देवानन्द—(आकर) धंधा निकाला है या संसारको तुम्हारे ढोंग और पोपलीलाके जालसे बचाया है ।

चपल—कौन ! देवानन्द ? थोड़ी देरके लिये और खूब बोल लो।

देवानन्द—इसके बाद ?

चपल—इसके बाद ! आ हा हा हा ‥‥इसके बाद सबके चेहरोंपर मुर्दनी छा जायगी। इस मैदानसे एक खूनकी नहर निकाली जायगी जो भागीरथीकी धारामें मिल जायगी और घोर अन्धकार छा जायगा।

देवानन्द—और इस अन्धकारसे नदियाका निर्मल चाँद अपना तीव्र और शीतल प्रकाश फैलाता हुआ म्लेच्छोंकी आँखोंमें चकाचौंध पैदा कर देगा। और वह खूनकी नहर अमृतका सागर बन जायगी।

चपल—

अच्छा जंगमें तीरसे भालोंसे बचानेवाली,
हम भी देखेंगे वह नदिया किसीपर कौन-सी है,
चाँद कैसा है वह अमृतकी नहर कौन-सी है।

देवानन्द—हाँ, देख लेना।

चपल—आजका समागम बड़ा भयानक होगा।

देवानन्द—कुछ भयानक नहीं। यह तो संसारकी रीति है। जबसे पृथ्वी रची गयी है तबसे ऐसा ही होता चला आया है।

चपल—क्या होता चला आया है ?

देवानन्द—पवित्र आत्मिक शक्तिसे राक्षसों और यवनोंके क्रोध और अहंकारके बलसे युद्ध होता चला आया है। इस शताब्दीमें भी हो रहा है और होता रहेगा।

चपल—इसका परिणाम ?

देवानन्द—

बुद्धिसे अपनी सोचो और अपने मनसे पूछो।
परिणाम खुद ही अपने अन्तःकरणसे पूछो॥

चपल—बहुत बुरा अन्त होगा।

देवानन्द—यह भगवान् जानते हैं।

चपल—उस भगवान्को ही तो देखना है ।

देवानन्द—भगवान्को देखना तेरे भागमें होगा जभी तो देखेगा ।
यदि उनकी कुछ कृपा होगी तब ही तो दर्शन पायेगा ॥
वरना इस क्रोधकी अग्निमें यों ही जलकर मर जायेगा ।
जिस तरह भटकता फिरता है उस तरह भटकता जायेगा ॥

चपल—वह भी देखा जायगा ।

आकाशवाणी—भगवान्को देखनेसे पहले अपने हाथोंके बहते हुए कोढ़को देख ।

चपल—(चौंककर और हाथ देखकर) हैं-यह क्या-कोढ़-हा-दर्द !

देवानन्द—चपल और कोढ़ी ! हे भगवन् ! यह कैसी लीला है ? चपल, मैंने तुम्हें इतना समझाया, परन्तु तुम्हारी समझमें कुछ न आया और आखिर कियेका फल पाया ।

जब धर्म नष्ट हो जाता है तब पिछला पाप उभरता है ।
जो जैसी करनी करता है वैसी ही भरनी भरता है ॥

चपल, अब उसकी लीलाको समझे ?

चपल—हाँ अब समझा । जो हुआ अच्छा हुआ । मैं इसी योग्य था—पापी—अधम—नीच मैं हूँ । श्रीवासकी आत्मा दुखानेका अपराधी मैं हूँ । जाओ देवानन्द, मेरा मुँह मत देखो । मैं कलंकी हूँ । दुनियाकी लानतें मुझपर बरस पड़ो—

मेरी तुम खाल खींचो मुझको अग्निमें जला डालो ।
मैं पापी हूँ व क्रोधी हूँ मेरी हस्ती मिटा डालो ॥

भगवन् ! जो कुछ किया ठीक किया । मेरी ओर ध्यान तो दिया—

मेरे पापोंने ही मुझको ये सारे दंड दिलवाये ।
दुखाये मैंने दिल मुझको भी यह दिन सामने आये ॥

मुहब्बतसे या गुस्सेसे प्रभुने मुझको देखा तो।
बड़ा एहसाँ किया भूले हुएको राह पे लाये॥

देवानन्द—धन्य हो! धन्य हो!! यह परिवर्तन भगवत्-कृपाका ही परिणाम है।

चपल—प्रभो! अब आपका ध्यान हृदयसे न जाने पावे। इतनी कृपा रक्खें कि प्रेमकी आग मेरे सीनेमें जलती रहे। आँसुओंकी झड़ी मेरी आँखोंसे निकलती रहे।

देवानन्द—चलो, आश्रमपर चलो, वहाँ कुछ शान्ति प्राप्त होगी।

चपल—हाँ, मुझे हरिनामध्वनि सुनाओ। मेरे हृदयको शान्ति दिलाओ।

देवानन्द—भगवान्‌की लीला वही जानते हैं। वह तुम्हें अवश्य क्षमा करेंगे। उनकी शरणमें जानेसे बेड़ा पार है। आओ मेरे साथ आओ।

(हाथ पकड़ता है, चपल पीछे हट जाता है)

चपल—मुझे न छुओ। कोढ़ीसे दूर रहो।

देवानन्द—चपल, ऐसा न कहो। तुम मुझे पहले भी प्यारे थे और अब भी प्यारे हो।

(देवानन्दका चपलको गले लगाना)

चपल—जमाना देख ले क्रोधीका क्या परिणाम होता है।
बुरा अभिमानका और क्रोधका अंजाम होता है॥

(जाना)

ड्राप दूसरा * सीन तीसरा

(नगर-कीर्तन)

सब—हरि बोल!

महाप्रभु—हरि बोल!

सब—हरि बोल!

(मकान सजे हुए हैं, रोशनी हो रही है, केले और कलश दरवाजों-पर रक्खे हुए हैं, लोगोंके हाथोंमें झण्डियाँ और मसालें हैं, मकानोंपर स्त्रियाँ बैठी हैं। अद्वैताचार्यका दल—अद्वैताचार्य, पण्डित श्रीवास, हरिदास, देवानन्द, मुरारी—झाँझ, खोल, करतालपर कीर्तन)

हरिनामध्वनि

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

(आगे बढ़ आना)

(श्रीमहाप्रभुका संकीर्तनदल—महाप्रभु, नित्यानन्दजी, गदाधर, दो प्रेमी, मधुर स्वरसे महाप्रभुजीका गाते हुए आना)

(स्त्रियोंका ऊपरसे फूल और बतासे बरसाना)

महाप्रभुका गाना—

मोहे चरण कमल अनुराग मिले—
हे मधुसूदन माधव मुरारि ! मोहे चरण······
नयननमें तुमरो स्वरूप बसै, हृदयमें छवी अनूप लसै,
श्रीराधारमण स्वरूप बसै, लीलाधर वृन्दावन विहार,
मोहे चरण············

गोकुलमें जमनाके तटपर, वंशीवटपर और पनघटपर।
श्रीराधारमण स्वरूप बसै, लीलाधर वृन्दावन विहार॥

(चपल और देवानन्दका आना)

चपल—रक्षा ! भगवन् रक्षा ! क्षमा, क्षमा !

कृपा करके मुझे भगवन् शरणमें अपनी ले लीजे।
पतितपावन मैं पापी हूँ मुझे भी आश्रय दीजे॥

महाप्रभु—चपल, इस अपराधको क्षमा करना तो पण्डित श्रीवासके ऊपर निर्भर है। तुमने उन्हींका अपराध किया है, उन्हींसे क्षमा माँगो।

चपल—श्रीवासजी, मुझे क्षमा करो। मेरी इस अवस्थापर दया करो।

श्रीवास—चपल, तुमने ऐसा अपराध ही क्या किया था ?

चपल—नहीं, मैं घोर अपराधी हूँ। मैंने ही तुम्हें बदनाम करनेके लिये तुम्हारे द्वारपर मांस और मदिरा रक्खा और न कहनेयोग्य शब्द कहे। मुझे क्षमा करो।

(चरणोंमें गिरना)

देवानन्द—श्रीवासजी, दया कीजिये, अब इन्हें क्षमा कीजिये।

श्रीवास—इसमें मेरा बिगाड़ क्या हुआ है ? यह तो सब भगवान्‌की इच्छा थी, उन्हें इस प्रकार ही तुमपर कृपा करनी थी—और यदि तुम अपराध ही समझते हो तो मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ।

देवानन्द—

अभिमानके मदमें चूर हुए संसारमें ठोकर खाते हैं।
पृथ्वीपे जो पाँव न रखते थे वे फिर सरके बल आते हैं॥
अभिमान-क्रोधका दुनियाँमें परिणाम यही फिर होता है।
जो पहले नहीं विचारते हैं वह पीछेसे पछताते हैं॥

श्रीवास—चपल, उठो ! मुझे अधिक लज्जित न करो।

(चपलका उठना, कोढ़का गायब हो जाना)

(चपलका आश्चर्य करना और महाप्रभुजीके पैर छूना)

सब—हरि बोल !

नित्यानन्द—

व्याकुल रहते हैं महाप्रभु जीवोंका ताप मिटानेको।
अवतार लिया है आखिर तो पृथ्वीका भार हटानेको॥

सब—हरि बोल !

नित्यानन्द—अहा ! कैसी लीला है। इधर भी आनन्द है, उधर भी आनन्द है। आकाशमें सब देवता आनन्द मना रहे हैं।

महाप्रभु—श्रीपाद ! आप दर्शन कर रहे हैं ?

नित्यानन्द—प्रभो ! आपकी कृपाका फल है।

महाप्रभु—आप किस विचारमें पड़े हैं ?

श्रीवास—प्रभो ! नदियामें तो इतनी जनता नहीं है फिर इतने प्रेमी और कहाँसे आ गये ? ऐसी अद्भुत सजावट कैसे हो गयी। और सब किस तरहसे इतने निडर होकर क़ाजीके द्वारपर इतने उत्साहसे जा रहे हैं ?

महाप्रभु—यही सोच तो मुझे भी है।

श्रीवास—आपको भी है त्रिलोकीनाथ, अब न छिपाइये। सब पहचान गये हैं।

महाप्रभु—श्रीपाद ! फिर नगरवासी शहरके मालिक क़ाज़ीके मुकाबलेमें क्यों इतनी हिम्मतसे बढ़े चले जा रहे हैं ?

नित्यानन्द—यह सब अपने नगरके सच्चे मालिकको, जगत्पिताको पहचान गये हैं। अब उन्हें क्या डर है—

इक प्रेमकी दृष्टि पड़नेपर बालकने पिता पहचान लिया।
अज्ञानका पर्दा हटनेपर जगके स्वामीको जान लिया॥

सब—हरि बोल !

महाप्रभु—

(सबका कीर्तन करते हुए जाना)

जय कृष्ण हरे नंदलाल हरे। जय जय प्रभु दीनदयाल हरे॥
जय दशरथनन्दन राम हरे। जय नन्दनँदन गोपाल हरे॥

(क़ाज़ीके मकानका अंदरूनी हिस्सा-क़ाज़ी घबराया हुआ आता है)

काज़ी— यह सदायें आ रही हैं आसमाँसे भाग-भाग।
सर पे रखके पाँव क़ाज़ी इस जहाँसे भाग-भाग॥

कहाँ जाऊँ, किधर जाऊँ, किससे कहूँ ! सिपहसालार सिकन्दरको भेजा। उसने कोई इत्तला न दी, सूबेदारको सिपाहियोंके साथ भेजा। उसका भी कुछ पता नहीं।

(डरावनी शक्ल ज़ाहिर होती है)

(ऊपर देखकर)

फिर वही डरावनी शक्ल। पनाह ! पनाह !! ऐ बख्शिशके देवता ! मुझे बख्श दे। मैंने जो कुछ किया। वह शहरके मुअज़्ज़िज़ आदमियोंके भड़कानेसे और उनके वरग़लानेसे किया—

बख़्श दे मेरे गुनाहोंको मेहरबाँ तू है।
मुझ गुनहगारके इस दर्दका दरमाँ तू है॥

(शक्ल ग़ायब हो जाती है और महाप्रभुका दर्शन होता है)

बख्श दिया। वह ख़ौफ़नाक बड़े और नुकीले दाँतोंवाली, चमकती हुई आँखोंवाली, काली शक्ल ग़ायब हो गयी और यह हुस्नसे जगमगाती हुई मूर्ति और ओंठोंपर संजीदा तबस्सुमवाली पाकसूरत फिर जलवा दिखाने लगी। आह ! कितना पुरजमाल चेहरा है, यह वही निमाई ब्रहमन है—

मुस्कराकर कह रहा है रुयेपुर तनवीर उठ।
बख़्शता हूँ बख़्शता हूँ सब तिरी तक़सीर उठ॥

गाना

तारीकिये दिलमें एक तनवीर नज़र आयी।
उस क़ादिरे मुतलक़की तसवीर नज़र आयी॥

दुनियाँका तमाशा भी इक ख्वाबे मजाज़ी है।
आज उसकी हक़ीक़तमें ताबीर नज़र आयी ॥
यह जोशे जुनूँ देखा, हमने तेरी उलफ़तमें।
बिजली जो कहीं चमकी, ज़ंजीर नज़र आयी ॥
आगोशे हक़ीक़तमें सब राज़ हुये ज़ाहिर।
हर ख़ाकके ज़र्रेमें अक्सीर नज़र आयी ॥
जब रंगे 'शफक' चमका अहसासके परदोंपर।
हर शक्लमें तेरी ही तसवीर नज़र आयी ॥

सरदार—हुजूर ! यह आप क्या कह रहे हैं ? कौन ब्रहमन है ? किसकी तसवीर है ? कुछ नहीं है, यह सब आपके दिलकी कमज़ोरी है।

क़ाज़ी—जुल्फ़िकार कमज़ोरी और मेरे दिलकी ? नहीं ! मेरा दिल कमज़ोर नहीं है। किसी ज़बरदस्त ताक़तने इसपर ग़लबा पा लिया है, मगर अब इस रुयेपुरनूरसे मैंने माफ़ी माँग ली है और उसने मुझे बख्श दिया है।

जुल्फिकार—नहीं ! यह आपका ख़याले ख़ाम है। आप ज़रा दिलको सँभालिये। ख़ुदाके सिवा न कोई डरानेवाला है और न कोई बख्शनेवाला है।

क़ाज़ी—यह भी मुमकिन हो सकता है। मेरे ख्यालोंने ही मुझे बुज़दिल बना दिया हो। मैं, और माफ़ी माँगूँ ? यह नहीं हो सकता—

यह दिलका वाहिमा है जो मुझे आजिज़ बनाता है।
मुझे कमज़ोर करके मुझसे ऐसा कहलवाता है ॥

जाओ फ़ौजको आरास्ता होनेका हुक्म दो। सरदारोंको समझा दो कि मेरे इशारे पर खूनकी नदियाँ बहा दें। इस शहरकी ईंटसे-ईंट बजा दें।

क़ाज़ी—हैं ! फिर वही बड़ी चमकीली डरावनी आँखें !

वहशतकी घटायें उठ-उठकर फिर सरपर मेरे छाने लगीं।
पहली-सी भयानक शक्लें फिर मुझको खानेको आने लगीं॥

मुझे सँभालो ! मेरा सर चकराता है । मैं गिरा जाता हूँ ।

(जुल्फिकार सम्हालकर पलंगपर लिटा देता है और क़ाज़ी बेहोश हो जाता है । बेगम साहिबाका आना, जुल्फिकारका जाना)

बेगम—यह क्या हालत है ? यह कैसी मुसीबत है ?

(पंखा झलती है)

क़ाज़ी—(होशमें आकर) तुम आ गयीं ।

बेगम—फ़रमाइये मिजाज़ कैसा है ?

क़ाज़ी—घबराहट है । एक अजीब वहशत है ।

बेगम—कुछ वहशत नहीं । आपने नाहक उनपर जुल्म करके यह गुनाह मोल लिया है । यह उसीका कुफ्फ़ारा है । मैं सब समझ रही हूँ ।

क़ाज़ी—तुम भी समझ रही हो और मैं भी समझ रहा हूँ । मैंने अभी बालाखानेसे देखा एक जम्मेग़फ़ीर सड़कोंपर गाता हुआ, खोल और मजीरे बजाता हुआ गुज़र रहा है । तमाम शहरमें रोशनी हो रही है । मैंने ख्याल किया कि यह किसीकी बारात है ।

बेगम—मगर वह दरअसल है क्या ?

(खोल, झाँझ, कीर्तनकी आवाज़)

क़ाज़ी—सुन रही हो यह उसीका कीर्तन है ।

बेगम—उसे कीर्तन करने दीजिये ।

क़ाज़ी—वह मुक़ाबला करनेकी गरज़से ही इस तरफ़ आ रहा है ।

बेगम—मुक़ाबला, कैसा मुक़ाबला ? यह आपका ग़लत ख़याल है। उसे इन बातोंसे कुछ सरोकार ही नहीं है। आप चाहे दिलमें कुछ सोचिये।

क़ाज़ी—वह हुक्म उदूली करता है।

बेगम—आपने ऐसा हुक्म क्यों दिया ?

क़ाज़ी—उसने मेरे गैज़ोगज़बको भड़का दिया है। वह गुस्ताख़ है। मगर ताज्जुब है वह इस तरफ़ इतनी बहादुरी और हिम्मतसे क्योंकर बढ़ा चला आ रहा है। यह क्या मामला है ?

बेगम—मामला क्या है ?

जो सबका मददगार है कब उससे जुदा है।
गर आपका ख़ुदा है तो उसका भी ख़ुदा है॥

(क़ाज़ीको मारो, पकड़ो यह आवाज़ आना)

क़ाज़ी—सुन रही हो। अब वह हमपर हमला करेगा। सरदारोंका पता नहीं है। सिपाही गुम हो गये हैं। मुसल्लह सवार इसी भीड़में खो गये हैं।

बेगम—वह हमला नहीं कर सकता है। उसके नाज़ुक दिलमें इस शरारतका ख़याल भी नहीं आ सकता। मैं उस नेकशीरत बच्चेको ख़ूब जानती हूँ—

रहमका है फ़रिश्ता मुराफ़तकी पाक सूरत है।
मुजस्सिम नूर है हुस्ने हक़ीक़ीकी वह मूरत है॥
ख़ुदाका दोस्त है शीरीं बयाँ है नेकसीरत है।
वह नेकी है सरापा उसकी रग-रगमें मुहब्बत है॥
सरे पुरनूरपर उसकी हक़ीक़त-ही-हक़ीक़त है।

क़ाज़ी—तुम ठीक कह रही हो। मुझे डर मालूम होता है। अच्छा मैं तुम्हारी हिफ़ाज़तके लिये अब यहीं रहूँगा। बाहर न जाऊँगा।

बेगम—आप जैसा मुनासिब समझें। मगर मुझे उसकी तरफ़से कोई डर नहीं है—

अगर वह साथ है तो कोई हमला कर नहीं सकता।
किसीका दिल दुखे वह यह गवारा कर नहीं सकता॥

क़ाज़ी—यों तो उसके वालिदसे मेरे दोस्ताना ताल्लुक़ात थे। मैं भी उसे अज़ीज़ समझता हूँ—

मुझे मालूम है मासूम है वह नेक आदत है।
मेरे दिलमें भी उस मासूम बच्चेकी मुहब्बत है॥

बेगम—तो फिर आपने उस मासूम बच्चेका दिल क्यों दुखाया?

क़ाज़ी—उसके हमसायोंने उसके ख़िलाफ़ लगातार शिकायत कर-करके मुझे उससे बददिल कर दिया।

यूसुफ़—(आकर) सरकार बड़ा अन्धेर हो रहा है। वह पण्डित हजारों आदमी साथ लिये इधर ही आ रहा है।

बेगम—आने दो। तुम बेफ़िक्रीसे मकानके फाटकपर बैठे रहो।

क़ाज़ी—चलो बालाख़ानेसे देखें।

(दोनों अंदर जाते हैं)

ड्राप दूसरा * सीन पाँचवाँ

(स्थान—क़ाज़ीके महलका बाहरी हिस्सा)

(अद्वैताचार्यवाला दल गाता हुआ आता है)

गाना

भक्त मुरारी—नंदलाला डाले गले माला, बाँसुरिया बजावत आवत है।
कबु धनुषबाण लिये वरत पवत,
कबु मुरलि बजायके प्राण हरत।

कबु राम लखत कबु श्याम लखत यह अद्भुत लीला दिखावत है,
कोई भेद न जाको पावत है ॥ मंगलाला..................॥

श्रीवास—यही तो काज़ीका भवन है, इसी स्थानपर तो महाप्रभुजी कीर्तन करेंगे।

मुरारी—कैसा रमणीक स्थान है। लीजिये, महाप्रभुजी भ धार रहे हैं।

(श्रीमहाप्रभुके कीर्तनदलका कीर्तन करते आना, सबका दण्डवत् करना)

श्रीमहाप्रभुजी—यूसुफ़! (द्वारपालसे) कृपया क़ाज़ीजीसे मेरा प्रणाम कह दीजिये।

यूसुफ़—वे इस वक्त़ जनानख़ानेमें आराम कर रहे हैं।

श्रीवास—जाओ, उनको सूचना दो कि श्रीमहाप्रभु पधारे हैं।

(यूसुफ़का जाना)

(कुछ नगरवासियोंका 'क़ाज़ीको मारो, पकड़ो' चिल्लाना, कुछ लोगोंका फूल तोड़ना और गमले फेंकना)

महाप्रभुजी—शान्ति रखिये! भले मनुष्योंका यह चलन नहीं है। हम क़ाज़ीको श्रीहरि-नाम-धुन सुनाकर उसकी आत्माको शान्ति देनेके लिये आये हैं। इस दुर्व्यवहारसे उसके हृदयको दुःख देने नहीं। आप सब बिल्कुल मौन रहिये।

(सब शान्त हो जाते हैं)

(क़ाज़ीसाहबका आना)

क़ाज़ी—कहिये, कहिये, मेरे लिये क्या ख़िदमत है!

महाप्रभु—प्रणाम, बताइये यह कौन-सी रीति है कि हम सब तो आपके महल-पर आयें और आप इस प्रकार महलमें घुसकर बैठ जायँ। आप तो मेरे पूज्य हैं। मामाजी! इस बालकसे यदि कुछ अपराध हुआ हो तो क्षमा कीजिये।

क़ाज़ी—मेरे अजीज ! मैंने लोगोंपर जुल्म करके तुम्हारे दिलको तकलीफ़ दी है। जब मैंने यह सुना कि तुम एक जमातको लेकर मुझसे इन्तकाम लेने आ रहे हो तो······तो······तो······

(कुछ घबराने लगता है)

महाप्रभु—हाय, हाय, आपने ऐसा विचार किया। यह सब आपकी प्रजा है, आपकी सन्तान है, आप इसकी रक्षा कीजिये।

क़ाज़ी—मैं किस क़ाबिल हूँ, सबकी हिफ़ाजत करनेवाला तो वह खुदा ही है।

महाप्रभु—यह तो आप जानते ही हैं कि हम सब भाई-भाई हैं, एक ही पिताकी सन्तान हैं—

एक ही सबका पिता है उसकी सब संतान हैं।
एक ही है रूह कुछ हैवान कुछ इंसान हैं॥
सबका है आगाज एक और सबका है अंजाम एक।
नाम लाखों है मगर सबका है उसका नाम एक॥

क़ाज़ी—हाँ, अब मैं समझ गया।

महाप्रभु—है वही मस्जिदमें और मंदिरमें वही जलवागर।

एक जलवा है जो हर जलवेमें आता है नज़र॥
इश्कमें उसके फ़ना हो जायँ यह ही शान है।
सबका है मज़हब यही सबका यही ईमान है॥

क़ाज़ी—हाँ, यह तो मैं जानता था कि—

जाते वाहिद उसकी है ईमान लानेके लिये।
एक है दरगाह सबको सर झुकानेके लिये॥

महाप्रभु—यह सब जानते हुए भी आपने श्रीहरिनामसंकीर्तन बंद करवाया इसका कारण मेरी समझमें न आया।

कीर्तन है प्राण अपना यही सबका जाप है।
यह है तो आनंद है इसके बिना संताप है॥
आपको पूजाका है गर यह तरीका नापसंद।
ख़ुद न करिये दूसरोंको रोकना तो पाप है॥

क़ाज़ी—अब मुझे आपकी रायसे पूरा इत्तिफ़ाक़ है। भला कौन-सा बंदये खुदा लोगोंको उसका नाम लेनेसे रोक सकता है।

महाप्रभु—फिर ऐसा क्यों हुआ?

क़ाज़ी—शहरके कुछ लोगोंने तुम्हारी और संकीर्तनकी शिकायतकी। मैंने उनको टाल दिया। उन्होंने मुझसे दुबारा कहा। मैंने उन्हें कतई इन्कार कर दिया। आखिरकार जब वह मेरे सरदारोंसे मिल गये और मेरी शिकायत शाहंशाहके पास भेजनेके लिये तैयार हो गये तब मैंने मजबूरन तदारुकके ग़रज़से ऐसा किया।

महाप्रभु—मगर अब उसका ध्यान रखना—हम सबको ईश्वरका हर समय ध्यान रखना चाहिये—

उसका ही हर समय ध्यान धरो उसका ही सदा गुणगान करो।
अपनेको सदा समझो सेवक, मनमें न कभी अभिमान करो॥
जीवोंपर करते रहो दया, सब क्रोध, मोह और काम तजो।
इस जगतपिताका नाम भजो, अल्लाह भजो या राम भजो॥

क़ाज़ी—समझ गया महाराज—श्रीगौरहरि!

एक ही है क़ादिरे मुतलक़, जो सबके दिलमें है।
रास्ते लाखों हैं, जलवा एक ही मंज़िलमें है॥

गौरहरि! तुम मुझे इंसानसे एक बालातर और बा अज़मत हस्ती

मालूम होते हो। तुम्हारे चेहरेपर जगमगाती हुई तजल्लियाँ मेरे दिलको रोशन कर रही हैं। तुम बुज़ुर्ग हो ।

महाप्रभु—नहीं क़ाज़ी साहेब बुज़ुर्गज़ात उसी परमपिता परमात्माकी है।

वही रक्षक है सबका उसका क़ाबा दिलका मंदिर है।
वही मस्जिदमें रहता है वही अल्लाहो अकबर है॥

क़ाज़ी—गौरहरि, महाप्रभु, लोग कहते हैं कि कुंजविहारी गिरवरधारी कृष्णमुरारी तुम हो। बता दो, मुझे बता दो, मुझ गुनहगारको वह रूहानी आँखें देकर अपना जलवा दिखा दो।

महाप्रभु—इतने न घबराइये। मुझे बताइये कि अब आप लोगोंको तो कीर्तन करनेसे न रोकेंगे।

क़ाज़ी—रोकना कैसा! हरगिज़ नहीं, उस रज्ज़ाके आलम भी इबादतसे मैं और दूसरोंको रोकूँ। कभी नहीं, मगर जिन्होंने मुझे उसके खिलाफ़ वरग़लाया है, उन्हें जेलखाने भिजवा दूँगा, सख़्त सज़ाएँ दिलवा दूँगा।

महाप्रभु—नहीं, इसकी भी आवश्यकता नहीं है, आपका धर्म सबपर दया करना है।

नित्यानन्दजी—धन्य हो दयासागर! प्रेमावतार, धन्य हो!! अपने विरोधियोंपर भी इतनी दयादृष्टि है।

क़ाज़ी—वाक़ई तुम काबिले परिसतिश हो।

(कदमोंमें गिरना चाहता है। महाप्रभुजी गले लगाते हैं, क़ाज़ी कुछ समय खामोश रहता है)

क़ाज़ी—मैंने क्या देखा!! उस खुदावन्दतालाने मुझे अपना जमाल दिखाया और मुझे बख्श दिया। आह!

निगाह की है तो यूँ ही सदा निगाह रहे।
हमेशा दिलमें तड़प और लबपै आह रहे॥

महाप्रभु—धन्य हो ! अब तुम्हारा कल्याण हो गया।

नित्यानन्द—जय भगवान् त्रिलोकीनाथ आपकी जय हो !

(सबका आनन्दमें मग्न हो जाना और क़ाज़ीका महाप्रभुके चरणोंमें फिर लोटना)

क़ाज़ी—गौरहरि, यह सब मेरी गलतफहमी थी। इससे पहले मैं नहीं समझ सका था कि रोकर, चिल्लाकर भजन करनेमें ही सही लुत्फ़ है। वे लोग गुनहगार थे जो इसको मज़हबके खिलाफ बताते थे।

महाप्रभु—हाँ,अभी वे इस गूढ़ आनन्द और सच्चे मार्गको नहीं पहचानते हैं। भोलेभाले संसारी जीव इसको नहीं जानते—

गाना

महाप्रभु— कोई क्या जाने कोई क्या जाने,
रो-रोकर हम क्या गाते हैं।
जो तनको झुलसा देते हैं,
जो मनको तड़पा देते हैं।
वे तीर कहाँसे आते हैं,

सब— कैसे जलवे दिखलाते हैं।

महाप्रभु—जो आँखोंमें होकर दिलतक बिजली-सी चमका जाते हैं।
मुरलीमें राधा-राधाकी,

चपल, क़ाज़ी, महाप्रभु—मुरलीमें राधा-राधाकी,
वो बैन कहाँसे आते हैं।
कोई क्या जाने कोई क्या जाने,

सब— रो-रोकर हम क्या गाते हैं।

चपल— किसके विरहमें हम रोते हैं,
घुल-घुलकर तन-मन खोते हैं।

महाप्रभुजी—अपना सर्वस्व लुटाते हैं,
नदियोंकी तरहसे बह-बहकर सागरमें मिलते आते हैं।
पिटकर और गाली खा-खाकर सबका कल्याण कराते हैं॥
कोइ क्या जाने कोइ क्या जाने······

(महाप्रभुका गाते-गाते आनन्दमग्न हो जाना, सबका उनके चरणोंमें झुकना और महाप्रभुका अन्तर्धान हो जाना)

(पटाक्षेप)

* श्रीराधाकृष्ण-झाँकी *